






















# ॥ अथ गायत्री पंचांग-
# प्रारंभः ।









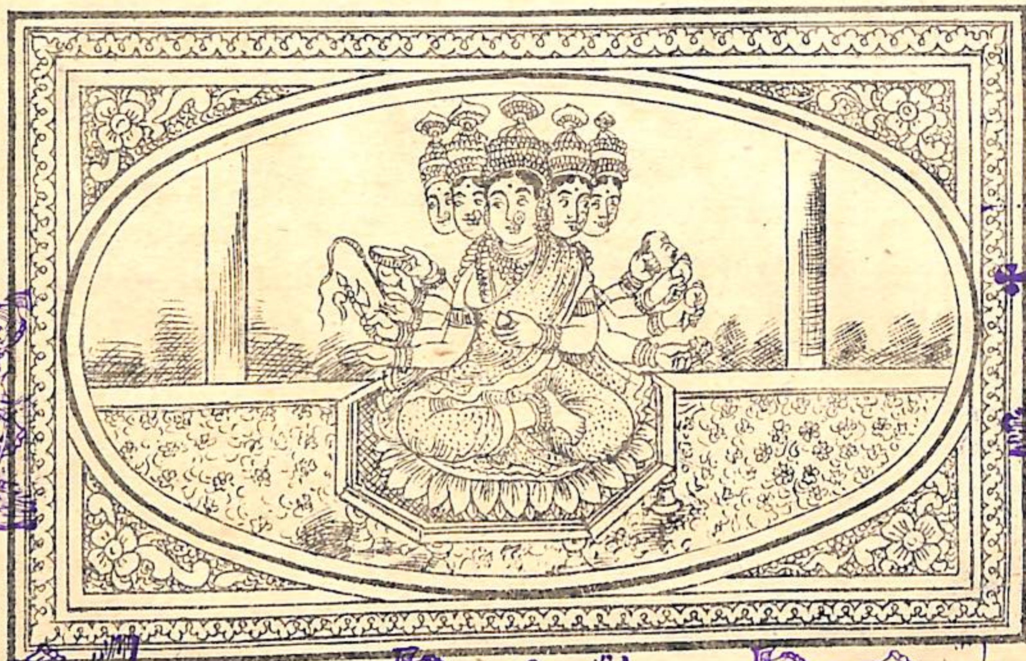




# अथ गायत्रीपञ्चांगस्थविषयानुक्रमः ।











ॐ सत्यंशिरसि

सांख्यायनगोत्रम्
ॐ भूर्भुवः स्वः परमात्मा.

ब्रह्म

ॐ तपः

ॐ जनः

ॐ अग्निः

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| त | म | धी | स्य | व | दे | र्गो | भ |
| त्स | हि | रो | प | दे | व | त् | ण्यं |
| वि | धि | र | ज | सः | सा | या | रे |
| तु | यो | यो | नः | प्र | चो | द | वे |

ॐ स्वः

विष्णुः

ॐ भूः पादयोः

ॐ भुवः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं बालां
ॐ महः नाभौ.

ॐ कुकुजंघयोः

ॐ स्वः पुच्छे



॥ ॐ तत्पूर्वस्याम् ॥

॥ ॐ तपः उत्तरस्याम् ॥

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र्व ५ | स्य १३ | प्र २१ | से | ज | नः २० | व १२ | तु ४ |
| रे ६ | धी १४ | चो २२ | सा | र | यो १९ | दे ११ | वि ३ |
| शि | व | स्थि | स | क्तः | श | के | वः |
| वो | लः | तो | दा | मु | या | यः | शि |
| जी | शि | जी | शि | श | शु | जी | वः |
| वः | वः | वः | वः | पा | य | न | शि |
| णि ७ | म १५ | द २३ | व | रो | यो १८ | र्गो १० | त्स २ |
| यं ८ | हि १६ | यात् २४ | दों | प | धि १७ | भ ९ | त १ |

॥ ॐ भूः दक्षिणस्याम् ॥

॥ ॐ स्वः पश्चिमस्याम् ॥

इंद्रायनमः पूर्वे

सोमायनमः

ईशान्यां ब्रह्मणेनमः

आग्नेय्यां

ॐ प्रसादिन्यैनमः प्रभायैनमः निलायैनमः

ॐ विश्वंभरायैनमः विलासिन्यैनमः प्रभावत्यैनमः

आदित्यायनमः

भौमायनमः

ॐ ब्रह्मणेनमः ॐ तुष्ट्यैनमः ॐ

ॐ आज्ञायैनमः ॐ

ॐ गायत्र्यैनमः

ॐ सरस्वत्यैनमः

ॐ सावित्र्यैनमः

ॐ परायैनमः शोभनायैनमः भद्ररूपायैनमः

ॐ प्रजायैनमः शान्त्यैनमः कान्त्यैनमः

बुधायनमः

केतवेनमः

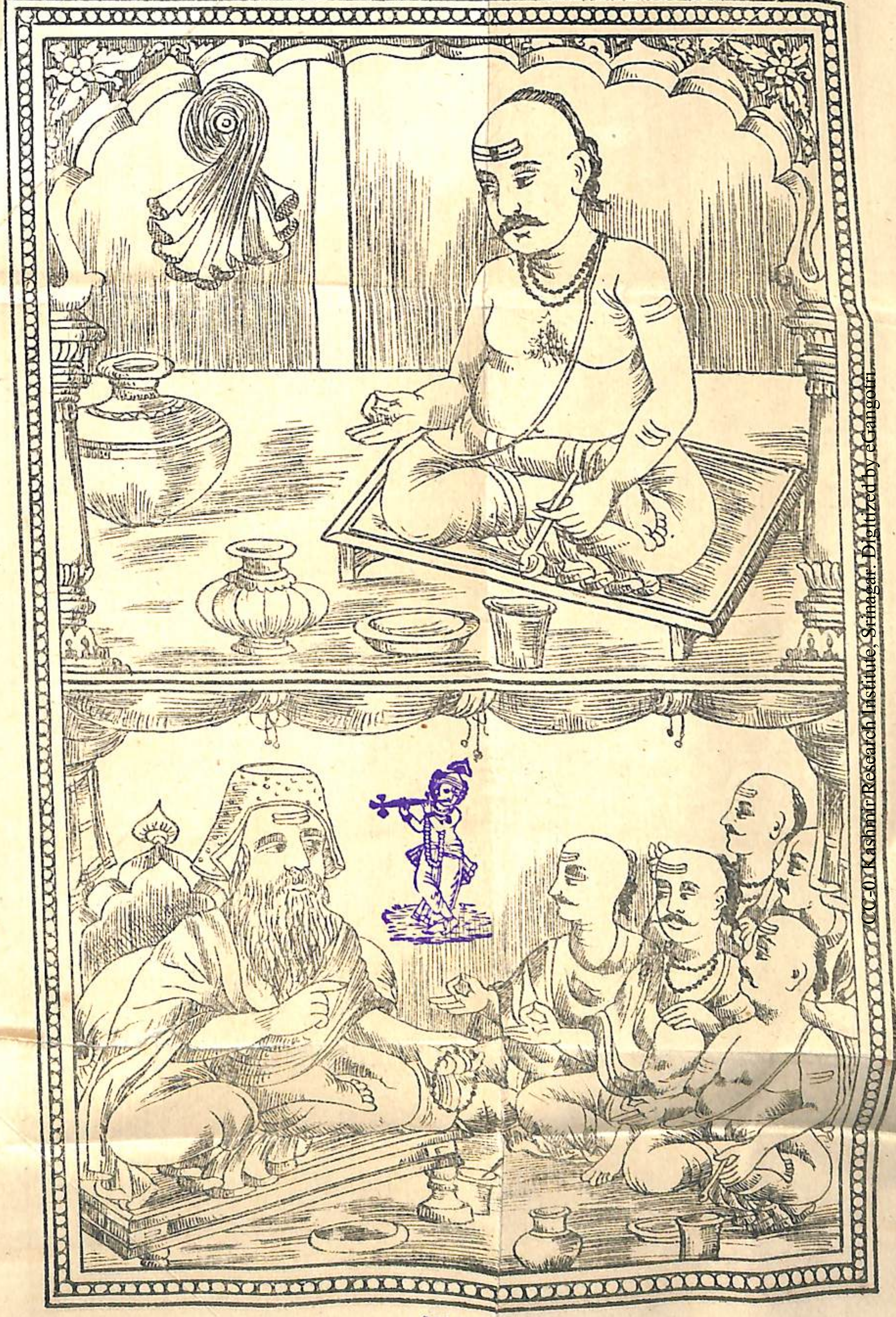
राहवेनमः





कुबेरायनमः उत्तरमुखे

यमायनमः दक्षिणकोणे



## ॥ अथगायत्री चक्रम् ॥

| अक्षर | ऋषि | छन्द | देवता | वर्ण | तत्त्व | शक्ति | मुद्रा | कला | फलानि | पापहर फलम् | तकारान्ताःपादाग्र्योः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| त | वसिष्ठः | गायत्री | अग्निः | पीत | पृथ्वी | ब्राह्मी | सुमुखं | तपनी | आयुष्यम् | अज्ञान दोषहरम् | ॐ तकारं पादांगुष्ठे |
| स | भरद्वाजः | उष्णिक् | वायुः | श्याम | अप् | गौरी | सम्पुटम् | सकला | आरोग्यम् | उपपातक हरम् | ॐ सकारं गुल्फे |
| वि | गौतमः | अनुष्टुप् | सूर्यः | श्वेत | तेज | प्रभा | वितलं | विश्वा | ऐश्वर्यदम् | महापातक हरम् | ॐ विकारं जंघयोः |
| तु | विश्वामित्रः | बृहती | विद्युत् | नील | वायु | नित्या | विस्तीर्णं | तुष्टा | धनदम् | दुष्टग्रहदोषहरम् | ॐ तुकारं जान्वोः |
| र्व | भृगुः | पङ्क्तिः | यमः | वह्निः | आकाश | विश्वा | एकमुखं | वरदा | कामदम् | भ्रूणहत्यादोषहरम् | ॐ र्वकारं ऊर्वोः |
| रे | शांडिल्यः | त्रिष्टुप् | वरुणः | अतिशुभ्र | गंधः | भद्रा | द्विमुखं | रेवती | विद्यादम् | अगम्यागमनहरम् | ॐ रेकारं गुदे |
| णि | लोहितः | व्यक्ति | बृहस्पतिः | हरितम् | रसः | विलासिनी | त्रिमुखम् | सूक्ष्मा | कामदम् | अभक्ष्यभक्षहरम् | ॐ णिकारं लिंगे |
| यं | गर्गः | कान्तिः | पर्जन्यः | अतिपीतं | रूपं | विमला | चतुर्मुखं | ज्ञाना | धनदम् | पुरुषहत्याहरम् | ॐ यंकारं कट्यां |
| भ | शातातपः | बृहती | इन्द्रः | ताम्र | स्पर्शः | काली | पंचमुखं | भर्गा | सन्ततिदम् | गोहत्या हरम् | ॐ भकारं नाभौ |
| र्गो | सनत्कुमारः | सत्या | गन्धर्वः | रक्तम् | [illegible] | [illegible] | षण्मुखं | गोमती | [illegible]दम् | स्त्रीहत्याहरम् | ॐ र्गोकारं [illegible] |
| दे | शुनःशेफः | पङ्क्तिः | त्वष्टा | श्यामः | वाक् | कान्ता | अधोमुखं | दर्विका | इष्टकन्यादम् | एनसदोषहरम् | ॐ देकारं स्तनयोः |
| व | भार्गवः | विराट् | मैत्रावरुणि | पीतम् | पाणिः | शान्ता | शकटम् | धरा | कान्तिदम् | [illegible]रादोषहरम् | ॐ वकारं हृदये |
| स्य | पाराशरः | विश्वाट् | पौष्णः | विद्युत् | चरणः | दुर्गा | यमपाशं | सिद्धांता | चिन्तितसिद्धिदं | पितृमातृदोषहरम् | ॐ स्यकारं कण्ठे |
| धी | पुण्डरीकः | विस्तार पंक्तिः | सुरेशः | शुभ्रम् | उपस्थ | सरस्वती | ग्रथितम् | ध्योनां | कीर्तिदायकम् | पूर्वजनितपापहरम् | ॐ धीकारं मुखे |
| म | कुत्सः | कात्यायनी | मरुत् | रक्तः | वायुः | विद्युद्वर्णी | उन्मुखोन्मुखम् | मर्यादा | सौभाग्यदम् | सर्वपाप हरम् | ॐ मकारं तालुदेशे |
| हि | दक्षः | पङ्क्तिः | सौम्यः | नीलम् | श्रोत्रम् | विशाला | प्रलंबम् | स्फुटा | अभीष्टसिद्धिदम् | प्रतिग्रहदोष हरम् | ॐ हिकारं नासाग्रे |
| धि | कश्यपः | त्रिष्टुप् | अंगिराः | रक्तः | त्वचा | विभूति | मुष्टिकं | बुद्धिः | त्रैलोक्यमोहनदं | प्रायरुचक्षेपहरम् | ॐ धिकारं नेत्रयोः |
| यो | जमदग्निः | जगती | विश्वेदेवाः | रुक्मसदृशम् | चक्षुः | कमला | मत्स्यः | योगमातरः | पराश्रयपदम् | मनःसर्वपापहरम् | ॐ योकारं भ्रुवोर्मध्ये |
| यो | आत्रेयः | महाजगती | अश्विनौ | उद्यत्सूर्यनिभः | जिह्वा | कखा | कूर्मः | योगांतरा | देवप्रतिग्रहदोषहृत् | इन्द्रपद प्राप्तिः | ॐ योकारं ललाटे |
| नः | विष्णुः | महिम्नी | प्रजापतिः | श्वेतम् | नासिका | पाप्मा | वराहकं | पृथ्वी | त्रैलोक्यदम् | विष्णु प्राप्तिः | ॐ नःकारं पूर्वमुखे |
| प्र | अंगिराः | नृमती | कुबेरः | रोचनाभः | मनः | अचला | सिंहाक्रांतं | प्रभवा | परानुग्रहक्षमं | रुद्रपद प्राप्तिः | ॐ प्रकारं दक्षिणमुखे |
| चो | कुमारः | पृच्छंद | शंकरः | चंद्रसदृशं | अहंकारः | परा | महाक्रांतं | उष्मा | तेजसोतिशयदं | ब्रह्मपद प्राप्तिः | ॐ चोकारं पश्चिममुखे |
| द | मृगशृंगः | सुधा | ब्रह्मा | पीतः | बुद्धिः | सुशीला | मुद्गरम् | दिव्यासना | स्वर्गप्रदम् | सायुज्यपद प्राप्तिः | ॐ दकारं [illegible]मुखे |
| यात् | भगः | | विष्णुः | शुभ्रवर्णः | गुदा | वज्रहृया | पल्लवं | निरंजन | स्वर्गलोकप्रदम् | सर्वव्यापि | ॐ यात्कारं मूर्ध्नि |

## ॥ अथ श्लोकाः ॥

प्रणवपूर्वं समुद्धृत्य व्याहृत्या सप्तभिस्तथा ॥ चतुर्विंशतिगायत्र्या द्विरावृत्योपवीतकम् ॥१॥ ब्रह्मणोत्पादितं सूत्रं विष्णुना त्रिगुणीकृतम् ॥ रुद्रेण दीयते ग्रंथिः सावित्र्या चाभिमंत्रितम् ॥ २॥
श्लोकार्द्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ग्रंथकोटिषु ॥ परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥ ३॥ तयादचोप्रनः योयोधिहिमधीस्यवदेर्गोभर्यंणिरेर्वतुवित्सत ॥ शिवः शिवः शिवो जीवो न जीवः केवलः शिवः पशुपाश स्थिती जीवः पाशमुक्तः सदाशिवः ॥ ४ ॥ वसिष्ठशापमोचनं हुं फट् स्वाहा उपसंहार मुद्रा प्रदर्शनम् ॥ प्रणवो भूर्भुवः स्वश्च पुनः प्रणवसंयुताम् ॥ अन्त्योकार समायुक्तां मन्यंते मुनयः पराम् ॥ ५॥ तदाद्यं च तदाद्यं च कुर्यात् प्रणवसंयुतम् ॥ अद्यांतरिक्षतां कुर्य्यादिति पाराशरोब्रवीदिति ॥ येन वांछंति संतानं मोक्षमिच्छंति केवलम् ॥ ६॥ प्रत्योंकारमसौ कुर्वन्नक्षरं मोक्षमाप्नुयात् ॥७॥ गृहे जपं समं विद्या द्गोष्ठे शतगुणं भवेत् ॥ नद्यां शतसहस्रं स्यादनंतं शिवसान्निधौ ॥ ८॥ अग्रे पृष्ठे तथा वामे समीपे गर्भमंदिरे ॥ जपं प्रदक्षिणं होमं न कुर्यान्न शिवालये ॥९॥ शिवमध्ये जपं कुर्य्यादथवा तीर्थमध्यतः यजमानो जापकश्च षण्मासं नैव जीवतीति ॥१०॥

तकारं सर्वव्यापि ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गायत्रीपुरश्चरणविधिरुच्यते ॥ ॥ तत्र पुरश्चरणं नाम मंत्रफलसिद्ध्यर्थमुपोद्घातत्वेन पूर्वसेवनम् ॥ अन्यच्च॥ पूजात्रैकालिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च॥होमं ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यत इति ॥कुलार्णवे ॥ पंचांगानि महादेवि जपो होमश्च तर्पणम् ॥ अभिषेकश्च विप्राणामाराधनमपीश्वरि ॥ पूर्वपूर्वदशांशेन पुरश्चरणमुच्यत इति ॥ ॥ पुरश्चरणस्थानानि ॥ विश्वामित्रकल्पे ॥ पर्वताग्रे नदीतीरे बिल्वमूले जलाशये ॥ गोष्ठे देवालयेऽश्वत्थे उद्याने तुलसी

वने॥पुण्यक्षेत्रे गुरोः पार्श्वे चित्तैकाग्रस्थलेऽपि च॥
पुरश्चरणकृन्मंत्रीसिध्यत्येव न संशय इति ॥ ॥पुर
श्चरणं कर्त्तुं योगतासिद्ध्यर्थं देहशुद्धिप्रकारमाह॥
विश्वामित्रः ॥ आत्मनः शोधनार्थाय लक्षत्रयं
जपेद्बुधः ॥ अथवाप्यष्टलक्षं तु गायत्रीं श्रुतिचो
दिताम् ॥ चतुर्विंशतिलक्षं वा याज्ञवल्क्यमतं
यथेति ॥ अथवा नद्यादितीर्थे सर्वप्रायश्चित्तवि
धिना षडब्दं त्र्यब्दंसार्धाब्दं वा यथाशक्ति कृच्छ्र
चांद्रायणादि सर्वप्रायश्चित्तं कृत्वा पुरश्चरणं कुर्या
दिति ॥ ॥ अथान्नशुद्धिप्रकारः ॥ विश्वामित्र

कल्पे ॥ अयाचितोञ्छशुक्लश्च भिक्षावृत्तिचतुष्ट
यम् ॥ तांत्रिकैर्वैदिकैश्चैव अन्नशुद्धिः प्रकीर्तिता॥
अन्नानुसारिकर्माणिबुद्धिःकर्मानुसारतः॥तत्र तपो
युक्तेन तापसेन क्षत्रियवैश्यशूद्रादीनामन्नं न ग्राह्य
म् ॥ पललस्पर्शमात्रेण तपो दहतिनिश्चितमित्यु
क्तेः ॥ भिक्षान्नं शुद्धमानीय कृत्वाभागचतुष्टयम्॥
एकभागो द्विजार्थाय गोग्रासाय द्वितीयकः॥आ
तिथ्याय तृतीयश्च तुरीयस्तु स्वकीयक इति ॥
ग्रासप्रमाणं तत्संख्या च तत्रैव ॥ कुक्कुटांडप्रमाणं
तु ग्रासमानं विधीयते ॥ ह्यष्टौ ग्रासा गृहस्थस्य

वानप्रस्थस्तदर्धकम् ॥ ब्रह्मचारी यथेष्टं च गोमूत्र विधिपूर्वकम् ॥ प्राक्षणं नववारं स्यात्षड्वारं च त्रि वारकम् ॥ अच्छिद्रं च करं कृत्वा सावित्रीं च त दित्यृचम् ॥ मंत्रमुच्चार्य मनसा उक्तमार्गेण प्रोक्षये दिति ॥ ॥ आहारनियमस्तत्रैव ॥ अशक्तो वापि शक्तोवा आहारे नियते कृते ॥ षण्मासे तस्य सिद्धिः स्याद्गुरुभक्तिरतः सदा ॥ एकाहं पंचगव्याशी ह्येकाहं मारुताशनः ॥ एकाहं ब्राह्मणान्नाशी गायत्रीजप कर्मणीति ॥ मतांतरे ॥ स्नात्वा तु शतगायत्र्या शतमंत्रजले जपेत् ॥ शतेनापस्ततः पीत्वा सर्व

पापैः प्रमुच्यते॥चांद्रायणादिकृच्छ्रस्य फलंप्राप्नो
ति निश्चितमिति॥यदा लोकेषणा त्यक्तुं न शक्य
ते तदर्थोऽयं विधिरुच्यते॥क्षीराहारी फलाशी वा
शाकाशीवाहविष्यभुक् ॥ भिक्षाशीवाजपेद्यत्तत्कृ
च्छ्रचांद्रसमं भवेदिति ॥ वर्ज्याहारस्तत्रैव ॥ लव
णं क्षारमाम्लं च गृंजनादिनिषेधितम्॥तांबूलं च
द्विभुक्तिश्च दुष्टवासं प्रमत्तताम्॥श्रुतिस्मृतिविरोधं
च जपं रात्रौ विवर्जयेत् ॥ श्राद्धादेरनुरोधेन जपं
यदि त्यजेन्नरः॥स भवेद्देवताद्रोही पितॄन्सप्त नये
दध इति ॥ अथ नित्यानुष्ठेयधर्मास्तत्रैव॥ भूशा

य्या ब्रह्मचारित्वं मौनचर्यास्तथैव च ॥ नित्यं
त्रिषवणं स्नानं क्षुद्रकर्म विवर्जनम् ॥नित्यपूजा
नित्यदानमानंदस्तुतिकीर्तनम् ॥ नैमित्तिकार्चनं
चैव विश्वासो गुरुदेवयोः ॥ जपनिष्ठा द्वादशैते
धर्माः स्युर्मंत्रसिद्धिदाः॥नित्यंसूर्यमुपस्थाय तस्य
चाभिमुखो जपेत्॥ देवताप्रतिमादौ वा वह्नौ वा
भ्यर्च्य तन्मुखः ॥ स्नानपूजाजपध्यानहोमतर्पण
तत्परः॥निष्कामो देवतायां च सर्वकर्मनिवेदकः॥
एवमादींश्च नियमान्पुरश्चरणकृच्चरेदिति ॥ ॥ पु
रश्चरणारंभे वर्ज्यमासादि तत्रैव ॥ ज्येष्ठाषाढौ

भाद्रपदं पौषं तु मलमासकम् ॥ अंगारशनिवारौ तु व्यतिपातं च वैधृतिम्॥ अष्टमीं नवमीं षष्ठीं चतुर्थीं च त्रयोदशीम् ॥ चतुर्दशीममावास्यां प्रदोषं च तथा निशि॥ यमाग्निरुद्रसार्पेंद्रवसुश्रवणजन्मभम्॥ मेषकर्कतुलाकुंभमकरालिकलग्नकम्॥ सर्वाण्येतानि वर्ज्याणि पुरश्चरणकर्मणि॥ संध्यागर्जितनिर्घोषभूकंपोल्कानिपातने ॥ एतानन्यांश्च दिवसान्स्मृत्युक्तांश्च परित्यजेदिति ॥ ॥ पुरश्चरणकालः ॥ ॥ रुद्रयामले ॥ वैशाखे श्रावणे वापि आश्विने कार्तिके तथा॥ फाल्गुने मार्गशीर्षे वा मंत्री

कुर्यात्पुरस्क्रियाम् ॥ ॥ तिथ्यादिनिर्णयः चांद्रिका
याम्॥ पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा॥
त्रयोदशी च दशमीप्रशस्ता सर्वकर्मस्विति॥ रुद्र
यामले॥ गुरुशुक्रोदये शुद्धे लग्ने सद्वारशोधिते॥
चंद्रतारानुकूल्ये च शुक्लपक्षे विशेषतः॥ पुरश्चरण
कं कुर्यान्मंत्रसिद्धिः प्रजायत इति॥ ॥ जपस्था
नानि॥ नारदीये॥ शिवस्य सन्निधाने च सूर्याग्न्यो
र्वा गुरोरपि॥ दीपस्य ज्वलितस्यापि जपकर्म प्रश
स्यते॥ गृहे जपं समं विद्याद्गोष्ठे शतगुणं भवेत ॥
नद्यां शतसहस्रंस्यादनंतं शिवसन्निधौ॥ समुद्रती

रे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च ॥ पुण्याश्रमेषु सर्वेषु
जपःकोटिगुणोभवेदित्युक्तस्थानानामन्यतमंस्था
नमाश्रित्य दीपस्थानं विचिंतयेत् ॥तद्यथा॥कूर्म
स्यैव मुखंविद्धि दीपस्थानं सुसिद्धिदम् ॥चतुरस्रं
भुवं भित्त्वा कोष्ठानां नवकं लिखेत्॥पूर्वकोष्ठादि
विलिखेत्सप्तवर्गान्यनुक्रमात् ॥ लक्षावीशे मध्य
कोष्ठे स्वरान्युग्मक्रमाल्लिखेत्॥दिक्षुपूर्वादितोयत्र
नामस्याद्यक्षरंभवेत् ॥ मुखं तदास्यजानीयाद्धस्ता
वुभयतःस्थितौ॥ पृष्ठं कुक्षी उभे पादौ द्वौ शीर्षं
पुच्छमीरितम् ॥ कूर्मचक्रमिदं प्रोक्तं मंत्राणां

सिद्धिसाधनमिति ॥ कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गंगा सागरसंगमे॥ महाकाले च काश्यां च कूर्मस्थानं न चिंतयेदिति ॥ ॥ अथासनानि ॥ शारदायाम् ॥ कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि ॥ स्यात्पौष्टिकं च कौशेयं शांतिकं वेत्रविष्टरम् ॥ वंशासने व्याधिनाशः कंबले दुःखमोचनम्॥ सर्वाभावेत्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यत इति ॥ ॥ जपमाला तत्रैव॥ रुद्राक्षः श्वेतपद्माक्षमाले तु अखिले जपेत ॥ अतिस्थूलोतिसूक्ष्मश्च स्फुटितोभंगुरस्तिंदुः॥ भिन्नः पुरा धृतो जीर्णो रुद्राक्षो वर्ज्यः

स्मृतः॥ अष्टोत्तरशतैर्माला प्रशस्ता सर्वकर्मसु ॥ गुरुं प्रकाशयेद्धीमान्मंत्रं नैव प्रकाशयेत् ॥ अथ मालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेदिति॥ ॥ मालासंस्कारस्तत्रैव ॥ क्षालयेत्पंचगव्येन सद्योजातेन तज्जलैः ॥ चंदनागरुगंधाद्यैर्वामदेवेन घर्षयेत् ॥ धूपयेत्तामघोरेण लेपयेत्पुरुषेण तु ॥ मंत्रयेत्पंचमेनैव प्रत्येकं तु शतं शतम् ॥ मेरुं च पंचमेनैव तथा मंत्रेण मंत्रयेत् ॥ येन प्रतिष्ठिता माला तमेव तु मनुं जपेदिति ॥ ॥ जपप्रकारः॥ विश्वामित्रकल्पे ॥ ॐकारं पूर्वमुच्चार्य भूर्भुवः

स्वस्तथैव च॥गायत्रीं प्रणवांतां च मध्ये त्रिप्रणवां तथा ॥ एवं नित्यं जपं कुर्याद्ब्राह्मणो विप्रपुंगवः॥ भिन्नपादा तु गायत्री ब्रह्महत्याप्रणाशिनी ॥ अभिन्नपादागायत्री ब्रह्महत्यांप्रयच्छति॥अच्छिन्नपादगायत्रीजपं कुर्वंति ये द्विजाः ॥ अधोमुखाश्चतिष्ठंति कल्पकोटिशतानि च ॥ धर्मशास्त्रपुराणेषु इतिहासेषु सुव्रत ॥ पंचप्रणवसंयुक्तां जपेदित्यनुशासनम् ॥ जपसंख्याष्टभागान्ते पादो जाप्यस्तुरीयकः ॥ स द्विजः परमो ज्ञेयः परं सायुज्यमाप्नुयात ॥ अन्यथा [illegible] स जपो

विफलो भवेत्॥प्रारंभादिनमारभ्य समाप्तिदिवसा
वधि॥न न्यूनं नातिरिक्तं च जपं कुर्याद्दिनेदिने॥
नैरंतर्येण कुर्वीत स्वस्ववृत्तिं न लिंपयेत्॥प्रातरार
भ्य विधिवज्जपेन्मध्यंदिनावधि॥मनःसंहरणं शौ
चं यानं मंत्रार्थचिंतनमिति॥ ॥ जपसंख्या
तत्रैव॥गायत्रीछन्दोमंत्रस्य यथासंख्याक्षराणि
च ॥ तावल्लक्षाणि कर्त्तव्यं पुरश्चरणकं तथेति
॥ ॥ प्रपंचसारेपि ॥ एवं कृत्वा तु सिद्ध्यर्थं गा
यत्रीं दीक्षितो जपेत् ॥ तत्त्वलक्षं विधानेन भि-
क्षाशी विजितेंद्रिय इति ॥ ॥ होमद्रव्याणि

तत्संख्या च शारदायाम् ॥ क्षीरोदनं तिला दूर्वाः क्षीरद्रुमसमिद्वरान् ॥ पृथक्सहस्रत्रितयं जुहुयान्मंत्रसिद्धय इति ॥ विश्वामित्रेपि ॥ तिलैः पत्रैःप्रसूनैश्च यवैश्च मधुनाप्लुतैः॥कुर्याद्दशांशतो होमं ततः सिद्धो भवेन्मनुरिति ॥ अत्र दशांशत स्तर्पणं दशांशहोम इत्यर्थः ॥ होमात्पूर्वं तर्पण स्योक्तत्वात् ॥ होमार्थं मंडपकुंडादिनिर्णयस्तद्र चनाप्रकारश्च तत्तद्ग्रंथेभ्योऽवगंतव्यः ॥ विस्तर भयान्नेह लिखितः ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ विश्वामित्रकृतगायत्री
कल्पप्रारंभः ॥ स्वगुरुं पूजयेन्नित्यमुपचारैस्तु पं
चकैः ॥ भक्तिश्रद्धानुसारेण विश्वामित्रं प्रकल्पये
त् ॥ १ ॥ अस्य कृत्स्नस्य मंत्रस्य प्राणायामं नि
रुंधयेत् ॥ प्राणायामं नियम्याशु गुरुपूजापुरः
सरम् ॥ २ ॥ प्रातरुत्थाय यो विप्रः शयने पर्यव
स्थितः ॥ एकाग्रमानसो भूत्वा ध्यायेन्मूलेऽथ
कुंडलीम् ॥ ३ ॥ नाभिसंनिहिता ज्ञेया द्वात्रिंश
द्वर्णसंख्यया ॥ एवं ज्ञात्वा प्रभातायां षडाधारं त
था न्यसेत् ॥ ४ ॥ षडाधारं तथा वक्ष्ये विन्यसेच्च

गा.

८

तुरक्षरम् ॥आद्यंतप्रणवैर्युक्तं षट्कुक्षिस्तु ततोन्य

सेत् ॥ ५ ॥ सहस्रदलमध्यस्थां सबालां सगुरौ

यके ॥ हंसहंसेति विज्ञानात्संकल्पध्यानपूर्वकम्

॥ ६ ॥ अस्याः संकल्पमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्य

ते ॥ ततोत्थाय बहिर्गम्य मलमूत्रविसर्जनम् ॥

॥७॥ दुर्गंधत्यागपर्यन्तं कृत्वा शौचं समाहितः ॥

ततो नदीं समागम्य गंगाध्यानपुरःसरम् ॥ ८ ॥

आचमनत्रयं कृत्वा त्रिवारं स्नानमाचरेत् ॥

अग्निमंडलमालिख्य जलमध्ये सबिंदुकम् ॥माया

बीजेन मध्यस्थमुभयोर्व्याहृतित्रयम् ॥ ९ ॥

वि.

१

८

ततः शुद्धाम्बुनाचम्य प्राणायामत्रयं कुरु ॥ देश
कालार्थमुच्चार्य्य गायत्रीध्यानपूर्वकम् ॥ १० ॥
सूक्ताग्निमार्जनंकुर्याद्यथाशाखोक्तमार्गतः ॥ अ
घमर्षणमंत्रं च स्नानं पंचांगपूर्वकम् ॥११॥ श्रोत्रे
नासाक्षि रुद्ध्वा च सहस्रांतं जले वपुः ॥मग्नं कुर्य्या
ज्जपेन्मंत्रं कुर्याद्वायुनिरोधनम् ॥ १२ ॥ ततः
स्नानत्रयं कुर्याच्छिरोव्याहृतिपूर्वकम् ॥ त्रिवा
रं त्रिविधं स्नानं पायुमेढ्रं शिरःस्तनम् ॥ १३ ॥ प्रो
क्षयेच्छंखमुद्राभिर्व्याहृत्यादिशिरोन्तकम् ॥ तत
स्तीरं समागत्य गायत्रीकवचं पठेत् ॥ १४ ॥ शु

चिवस्त्रांगमाश्रित्य ललाटे तिलकं तथा ॥ ओमा
पो ज्योतिर्मंत्रेण शिखाबंधनमाचरेत् ॥ १५ ॥
त्रिकोणमध्ये ह्रींकारं कोणान्ते प्रपदं तथा॥ दंडेषु
व्याहृतिश्चैव मुल्लिखेदुदकं तथा ॥ १६ ॥ प्रणवे
न बहिर्जप्त्वा जलं पीत्वा च मार्जनम् ॥ न तत्र वि
न्यसेत्संध्यामन्यथा शूद्रवद्भवेत् ॥ १७ ॥ इति
श्रीविश्वामित्रकल्प आह्निकलक्षणयोगो नाम प्र
थमः परिच्छेदः ॥ १ ॥ ॥ चतुर्विंशतिनामानितत्त
त्स्थानेषु विन्यसेत् ॥ केशवादीनि विन्यस्य पौरा
णाचमनं जपेत् ॥ १ ॥ चतुर्विंशतिवर्णानां केशवा

दिरनुक्रमात् ॥ देव्याः पादैस्त्रिभिः पीत्वा चांगुलै
र्नवभिः स्पृशेत् ॥ २ ॥ सप्तव्याहृतिगायत्री
शिरस्तुर्यद्वयं न्यसेत् ॥ श्रुतिस्मृतिविधाने
न द्विविधं परिकल्पयेत् ॥ ३ ॥ तृतीयं मूलमंत्रेण
क्रमाद्वर्णानि विन्यसेत् ॥ आचमनविधिः प्रो
क्तः पौराणः स्मार्त्तआगमः ॥४॥ श्रौतं मानसमाच
म्य पंचभिः श्रुतिचोदितैः ॥ संध्याप्रारंभकाले
त्वाचमनत्रितयं न्यसेत् ॥ ५ ॥ कुरुते सर्वसिद्धिः
स्यान्नास्ति चेन्निष्फलं भवेत् ॥ संहतांगुलिना तो
यं ब्रह्मतीर्थैं पिबेज्जलम् ॥ मुक्तांगुष्ठकनिष्ठायांशेषै

गा, णाचमनं भवेत् ॥ ६ ॥ गोकर्णाकृतिहस्तेन माष वि.
१० मात्रं जलं पिबेत् ॥ न्यूनातिरिक्तमात्रेण तज्जलं १
सुरया समम् ॥७॥ आदौ चांते तथा मध्ये न्यसे
च्चाचमनं क्रमात् ॥श्रुतिस्मृतिपुराणानि पर्यायेण
विलोमतः ॥ ८ ॥ केशवादित्रिभिर्नाम अपः पी
त्वा यथाविधि ॥ गोविंदमग्रतो न्यस्य विष्णुं सु
षुम्नि विन्यसेत् ॥ ९ ॥ मधुसूदनमादित्यं शुद्धां
शुञ्च त्रिविक्रमम् ॥अग्रतो वामनञ्चैव हस्तयोः श्री
धरं तथा ॥ १० ॥ हृषीकेशं पद्मनाभमुभयोः १०
पादयोर्न्यसेत् ॥ दामोदरं ब्रह्मरंध्रे नासा संकर्षण

स्य च॥११॥ नासामध्ये तु विन्यस्य नासांते वा
विनिर्द्दिशेत्॥ दक्षनासान्तु विन्यस्य वासुदेवं तथै
व च॥१२॥ प्रद्युम्नं च तथा वामे अनिरुद्धं च दक्षि
णे॥ पुरुषोत्तमं वामनेत्रे दक्षिणे च अधोक्षजम्॥
॥१३॥ नारसिंहं वामनेत्रे नाभौ चाप्यच्युतं न्य
सेत्॥ जनार्दनं हृदि न्यस्य भुजे दक्षिणबाहुके॥
॥१४॥इति विश्वामित्रकल्प आचमनयोगो नाम
द्वितीयः परिच्छेदः ॥२॥ प्राणायामत्रयेणैव प्रातः
संध्यां समाचरेत् ॥ प्राणायामसमायुक्तं प्राणाया
ममिति स्मृतम्॥१॥ उत्तमं नवधा चैव मध्यमं

ऋतुसंख्यया ॥ अधमं त्रयमित्याहुः प्राणाया
मो विधीयते ॥ २ ॥ सप्तव्याहृतिभिश्चैव प्राणा
यामं पुटीकृतम्॥व्याहृत्यादिशिरोंतं च प्राणाया
मत्रयत्रिकम्॥ ३ ॥ सव्याहृति सप्रणवां गायत्रीं
शिरसा सह ॥ त्रिः पठेदायतः प्राणान्प्राणायामः
स उच्यते॥४॥बिंदुतः प्राणमार्गे च गायत्रीं बिंदुसं
युताम् ॥ व्याहृत्यादिशिरोंतं च प्राणायामत्रयत्रि
कम्॥५॥ आदौ कुंभकमाश्रित्यरेचपूरकवर्जितम्
व्याहृत्यादिशिरोंतं च प्राणायामं तु कुंभकम ॥
॥६॥प्राणायाममसमानाबिंदुमहितं बिन्दुत्रयं संयुतं

सप्तव्याहृतिबिंदुसंपुटपरं वेदादिपादत्रयम् ॥
गायत्रीं शिरसा त्रिनाडिसहितामीड्यहृदये हृ परे
शुद्धं केवलकुंभकं प्रतिदिनं ध्यायामितत्त्वंपदम्॥
॥७॥अधमे द्वादशी मात्रा मध्यमे द्विगुणा मता॥
उत्तमा त्रिगुणा प्रोक्ता प्राणायामं निरुंधयेत् ॥८॥
रेचकं कुंभकं चैव पूरकं वायुरोधनम्॥एवं क्रमेण
युंजीत प्राणायामस्य लक्षणम् ॥९॥ निषिद्धं रेचकं
ज्ञेयं पूरकं च तथैव च॥अमोघं कुंभकं प्रोक्तं प्राणा
यामं प्रकीर्तितम् ॥ १० ॥ अघोषनिर्घोषगमा
गमस्थं नाडीद्वयं रेचकपूरकं च ॥ कुंभोपमं पू

गा. र्णघटप्रकारं ह्येवंविधं स्याच्छ्वसनस्य साध्यम् ॥ वि.

१२ ॥११॥ शब्दपूर्वकमभ्यासं शब्दव्यंजनसंयुतम् ॥ १

भिन्नभांडोदकं यद्वच्छ्वसनस्य व्यतिक्रमात् ॥

॥१२॥ इडापिंगलासुषुम्नाच्छब्दपूर्वव्यतिक्रमात् ॥

तत्सर्वं निष्फलं प्रोक्तमिति शंकरभाषितम् ॥१३॥

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा ॥

ततो धर्मं समाश्रित्य प्राणायामविदो विदुः ॥१४॥

नासापुटं त्वंगुलीभिः पंचभिर्वायुरोधनम् ॥ शनैः १२

शनैस्तु निःशब्दं प्राणायामं निरोधयेत् ॥ १५ ॥

नासिकापुटमंगुल्या निधायैकेन मारुतम् ॥ आ

कृष्य धारयेदग्निं प्राणायामं विचिंतयेत् ॥ १६ ॥
प्राणायामेन ज्ञात्वा च स्नापयेच्चिन्मयं शिवम् ॥
तदादौ मानसं कुर्य्यात्तदा केवलकुंभकम् ॥१७॥
पंच प्रजालकं चैव प्राणायामं समाचरेत॥पूजामा
नससंयुक्तं प्राणायामफलं भवेत् ॥ १८ पंचपूजां
विना येन प्राणायामं करोति यः॥तस्य निष्फलितं
कर्म विश्वामित्रेण भाषितम्॥१९॥लकारंचहकारं
च यंकारं चरकारयोः ॥ चकारमितिविख्यातं पं
चपूजात्मकं जपेत् ॥ २० ॥ सिद्धासनसमो ना
स्ति न कुंभेनैव लोपमम्॥मंदहृष्टिसमोनास्तिप्रा

णायामं समभ्यसेत् ॥ २१॥ अंतश्चेतो बहिश्चक्षुर
धःस्थाप्य सुखासनम्॥समत्वं च शरीरस्य प्राणा
यामं समभ्यसेत ॥२२॥ अस्त्रप्रयोगकाले तु प्रा
णायामं च लंबकः ॥ प्राणायामबलोपेत उपसंहा
रकारकः ॥ २३ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्राणाया
मं समाचरेत् ॥सर्वधर्मपरित्यागी स महापातकी
भवेत॥ २४ ॥ इति विश्वामित्रकल्पे प्राणायाम
योगो नाम तृतीयः परिच्छेदः॥ ३ ॥ पादंपादं
क्षिपेन्मूर्ध्नि प्रतिप्रवणसंपुटम् ॥ निक्षिपेदष्टपादं तु
अधो यस्य क्षयाय च॥ १॥ अष्टाक्षरं नवपदं प

दादौ ब्रह्महा भवेत्॥ऋचादौ मार्जनं कुर्य्यात्सो
श्वमेधफलं लभेत्॥२॥यस्य क्षयाय पादं तु आपः
सिंधुत्वमेव च ॥ भूमौ पादौ विनिःक्षिप्य इतरन्मू
र्ध्नि विन्यसेत् ॥ ३ ॥ प्रातःसूर्यश्चमंत्रेण सायम
ग्निः पिबेज्जलम्॥आपः पुनंतु मध्याह्ने क्रमेणाच
मनं न्यसेत् ॥ ४ ॥ आपोहिष्ठेति मंत्रेण नवपादं
द्विवारकम् ॥ हिरण्यवर्णाश्चत्वारो दधिमंत्रद्वि
वारकम् ॥ ५॥ पदादौ क्लीं पदं मध्ये पदांते मार्जनं
भवेत्॥ऋचादौ प्रणवं चोक्त्वा ऋचोंते मार्जनं भ
वेत्॥६॥ सत्त्वं रजस्तमो जातं मनोवाक्कायिका

दिषु ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिनवैतान्नवभिर्दहे
त् ॥७॥ दधिद्विमार्ज्जनं चैव हिरण्यादिचतुष्टयम्॥
कामक्रोधादिषड्वर्गं मार्ज्जयेत्सर्वमार्ज्जनम् ॥ ८ ॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पे मार्ज्जनयोगो नाम
चतुर्थः परिच्छेदः ॥ ४ ॥ संध्यावंदनवेलायामर्घ्यं
दद्यात्त्रयं बुधः ॥ सायं प्रातः समानं स्यान्म
ध्याह्ने च पृथग्विधिः ॥ १ ॥ एकं मध्याह्नकाले तु
सायं प्रातस्त्रयस्त्रयः॥एवं ज्ञात्वा सृजेदर्घ्यं सूर्यनक्ष
त्रपूर्वकम् ॥२॥ एकं शस्त्रास्त्रनाशाय एकं हननना
शने असुराणां वधायार्घ्यं प्रायश्चित्तार्थसंयुतम्३॥

दद्यात्केवलगायत्र्या मूढो ह्यर्घ्यं तु यो द्विजः ॥
सबिन्दुब्राह्मणोनाम सर्वधर्मबहिष्कृतः॥४॥ ब्रह्मा
स्त्रं नाभिजानाति स विप्रःशूद्र एव हि॥तस्य कर्मा
दिकं जातं धर्माद्यं निष्फलं भवेत् ॥५॥बीजमंत्रेण
गायत्र्याः प्रणवेत्यभिधीयते ॥ ६ ॥ देहस्तु दंड
इत्युक्तः संज्ञाकवचमेव हि ॥ सर्वांगानि पदो मंत्रं
सर्वमंत्रे त्वयं विधिः ॥ ७ ॥ अस्त्राष्टवारतः प्रोक्ता
गायत्री व्याप्य उच्यते ॥ एतत्षणमंत्रकं ज्ञात्वा
अर्घ्यं दद्याद्द्वि नामतः ॥८॥ एकं मध्याह्नकाले च
प्रायश्चित्तं द्वितीयकम् ॥ अर्घ्यद्वयं तु मध्याह्ने

तथा मुक्तं महामुने ॥९॥ अर्घ्यत्रयं प्रयोगार्थं प्रा
यश्चित्तं चतुर्थकम् ॥ सायं प्रातर्द्विजादीनामेवमे
व विधिः क्रमात् ॥१०॥ ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदंडं च ब्रह्म
शीर्षं च संयुतम्॥अर्घ्यत्रयं प्रयोगार्थमेवमेव मुदा
हृतम् ॥ ११ ॥ शस्त्रमादौ ततो दंडं शिखास्त्रीणि
समुच्चरेत्॥पर्यायेण त्रिरुच्चार्य्य मंजलिं च त्रिधा
हरेत् ॥१२ ॥ अर्घ्यत्रयं प्रयोक्तव्यमभिमंत्रित
मंजलिम् ॥ त्रियुक्तं विसृजेदर्घ्यमसुराणां वधाय
च ॥१३॥ अस्त्रदंडशिरोयुक्तमर्घ्यमेकं समुच्चरेत्॥
अस्त्रं ... ॥ १४ ॥

प्रायश्चित्तं द्वितीयार्घ्यमसुराणां वधाय च ॥
प्रदक्षिणं पृथिव्यां च सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१५॥
असावादित्यमंत्रेण ब्रह्मेत्यादि प्रदक्षिणम् ॥
आपोभिरयुतं कार्यं सर्वाघौघनिकृंतनम् ॥ १६ ॥
हंसहंसेतिमंत्रस्य बृहत्यंतं समुच्चरन् ॥ शिरसा
दंडमस्त्रं च सन्मुखे इव निक्षिपेत् ॥१७॥ उपमंत्रं
समुच्चार्य्य शिरस्तत्र समुद्धरेत ॥ अर्घ्यमेकं तु म
ध्याह्ने तथा मुक्तं महामुने ॥१८॥ तर्जन्यंगुष्ठया
गेन राजसी मुद्रिका भवेत् ॥ राक्षसीमुद्रिकादत्तं
तत्तोयं रुधिरं भवेत् ॥१९॥ निक्षिपेद्यदिमूढात्मा

गा. रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ अंगुष्ठच्छायापतितं देवता वि०
१६ मुद्रिका भवेत् ॥ २० ॥ देवतामुद्रिकादत्ते सर्वैःपापैः १
प्रमुच्यते ॥ एवं विज्ञानमात्रेण सद्यः सिद्धिर्भवि
ष्यति ॥ २१ ॥ इति श्रीविश्वामित्रकल्पेऽर्घ्यदा
नयोगोनामपंचमः परिच्छेदः ॥ ५ ॥ ॥ ओमित्येका
क्षरं चोक्तं न्यासध्यानपुरःसरम् ॥ यथाशक्ति जपं
कुर्य्यान्नित्यकर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ शुचिर्भू
मौ लिखेद्यंत्रं बीजं बिंदुसमन्वितम् ॥ बीजराजं
लिखेन्मध्ये वह्निमंडलमध्यगे ॥ २ ॥ चतुरस्रं १६
ततो हस्तं सुदृढं मृदु निर्मलम् ॥ तत्रोपरिसमा

सीनो गायत्रीजपमाचरेत् ॥ ३ ॥ खशुद्धिं भूत शुद्धिं च कृत्वा शोषणदाहनम्॥ प्लवने च ततः कुर्यात्प्रणवादित्रयं क्षरैः ॥ ४ ॥ प्राणायामसमायुक्त अंतर्बाह्यं समातृकात् ॥ देहे न्यासं ततः कुर्यात्करांगन्यासमाचरेत् ॥ ५ ॥ ऋषिं न्यसेत्पूर्वमुखे तथा च्छन्द उदीरितम् ॥ देवता हृदि विन्यस्य गुह्ये बीजमिति स्मृतम्॥ ६॥ शक्तिं विन्यस्य चाधारे पादयोः कीलकं न्यसेत् ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा ऋष्यादिन्यासपूर्वकम् ॥ ७॥ आवाहनादि भेदं च दश मुद्राःप्रदर्शयेत्॥ आयातु वरदा देवीअं

गप्रत्यंगसंगमे ॥८॥ प्रातर्गायत्री सावित्री मध्याह्ने
च सरस्वती ॥एवमावाहनं ज्ञात्वा संध्यायां जपमा
चरेत्॥९॥हस्ताभ्यामनुलोमेन आवाहनमनाहुते।
नामत्रयमृषिश्छंदः क्रमेणावाहनं भवेत् ॥ १० ॥
मूलाधारेण गायत्री सावित्री मणिपूरके ॥ द्वाद
शारे सरस्वती छंदो नाडीत्रयं तथा ॥११॥ ऋषि
मूर्ध्नि सुविज्ञेय आवाहनमनुक्रमात् ॥ आवाहनं
यथोक्तं च यथोक्तं तु विसर्ज्जनम् ॥ १२ ॥ एवं
जानीहि विप्रेन्द्र जपध्यानंसमाचरेत् ॥आवाहनं
ततो न्यासं विना जाप्यं तु निष्फलम् ॥१३॥ च

तुर्विंशतिगायत्रीं प्रातःस्नात्वा जपेन्मनुम् ॥ प्रा
णायामं ततः कुर्यान्न्यासध्यानं समाचरेत् ॥१४॥
करन्यासं ततः कुर्यादंगन्यासं तथैवच ॥ चतुश्चतु
श्चतुष्कं च चतुश्चतुश्चतुश्चतुः ॥१५॥ षडंगं विन्य
सेद्देवीं गायत्रीं वेदमातरम् ॥ व्याहृतित्रयमुच्चा
र्य अनुलोमं च बिभ्रतः ॥ १६ ॥ करांगन्यासमा
रभ्य गायत्री पूर्ववद्भवेत् ॥ अकारं च उकारं च म
कारं बिंदुसंयुतम् ॥ १७॥ अनुलोमं न्यसेत्तत्र त्रि
रक्षरसमन्वितम् ॥ चतुर्विंशतिवर्णानां पल्लवोऽय
मुदाहृतः ॥ १८ ॥ चतुरक्षरसंयुक्तं करांगन्या

समाचरेत् ॥ तूर्यपादं विना न्यासमाद्यंतं प्रणवै

सह ॥ १९ ॥ व्याहृतित्रयमुच्चार्य चतुरक्षरसंयु

तम् ॥ पुनर्व्याहृतिमुच्चार्य करांगन्यासमाचरेत्

॥ २० ॥ पादंपादं द्विपादं च प्रातिप्रणवसंपुटम् ॥

करांगन्याससंयोगात्षड्भागैस्त्रिपदा भवेत् ॥

॥ २१ ॥ अंगुष्ठादिचतुर्वर्णामनुलोमक्रमेण तु ॥

हृदयादिचतुर्वर्णाः क्रमेणैव विलोमतः ॥ २२ ॥

चतुर्वर्णान्विना यस्तान्विपर्णं संन्यसेद्द्विजः ॥

तस्य वैफल्यमाप्नोति सत्यंसत्यं न संशयः ॥२३॥

अंगन्यासं करन्यासं देहन्यासं विना जपेत् ॥ अं

धत्वं बधिरत्वं च मूकत्वं प्राप्नुयान्मनुः ॥ २४ ॥
इति श्रीविश्वामित्रकल्पे आवाहनादियोगोनाम
षष्ठः परिच्छेदः॥६॥ ध्यानं मुद्रां नमस्कारं गुरुमंत्रं
तथैव च ॥ संयोगमात्मसिद्धिञ्च पञ्चधैवं विभा
वयेत् ॥ १ ॥ प्रातः केवलगायत्री मध्याह्ने व्या
हृतीयुता ॥ सायाह्ने तूर्यया युक्ता नित्यजाप्यं स
माचरेत् ॥ २ ॥ पादादौ रेफसंयुक्ता गायत्रीजप
लक्षणम् ॥३॥ पादत्रयं समुच्चार्य प्रतिलोमं ततश्च
रेत् ॥ रेफबिंदू तदाद्यन्तौ गायत्रीजपमाचरेत् ॥
॥ ४ ॥ गायत्रीं पूर्वमुच्चार्य्य तुर्य्यांत्यादिविलोम

तः ॥ सायंसंध्यां जपेदेवं साधकः सर्वसिद्धये ॥
॥ ५ ॥ तकारादियकारांतमनुलोमं विलोमतः ॥
तुर्यपादं विना मंत्रं प्रातःसंध्यामथाचरेत् ॥ ६ ॥
भकारादिहिकारांतं मध्यपादमिति स्मृतम् ॥
तार्तीयं तु प्रयोक्तव्यं तदर्घ्यं प्रथमं भवेत् ॥ ७ ॥
धकारादियकारांतं तृतीयं पादमुच्चरेत् ॥ प्रथमं
च द्वितीयं च त्रिविधं जपलक्षणम् ॥८॥ कालत्रयं
त्रिधा जाप्यं त्रिकालं त्रिविधं स्मृतम् ॥ अनुलो
मविलोमाभ्यां चिरं सिद्धिमवाप्नुयात् ॥९॥ च
तुर्विंशतिवर्णानामनुलोमं जपेदपि ॥ पूर्णजाप्य

फलं नास्ति अर्द्धजाप्यफलं लभेत् ॥ १० ॥ चतु
ष्पादं तु गायत्री अनुलोमविलोमतः ॥ नित्यंजा
प्यं प्रकुर्वीत भुक्तिमुक्तिं लभेन्नरः॥११॥नित्यनैमि
त्तकाम्यादिव्यस्ताव्यस्तं जपेन्मनुम् ॥ प्रातर्म
ध्याह्नसायाह्नं जपेदेवं क्रमेण तु ॥ १२ ॥ जप
पारायणं कुर्य्यात्त्रिपदासंपुटं नव ॥ एवं ज्ञात्वा
जपेन्नित्यमेकः कोटिगुणं भवेत् ॥ १३ ॥ कालत्र
यं यथोक्तं च जाप्यपारायणं परम् ॥ अनंतफल
माप्नोति सत्यं सत्यं न संशयः ॥ १४ ॥ अष्टोत्तर
सहस्रं वा अष्टोत्तरशतं तु वा॥अष्टाविंशतिमेवाथ

गा. गायत्रीदशकं जपेत् ॥ १५ ॥ ॐकारः पुरुषश्चैव
२० गायत्री सुंदरी तथा ॥ तयोःसंयोगकाले तु वस्त्र २
माच्छाद्य गण्यते ॥१६॥ वरेण्यं विरलं चोक्का ज
पकाले विशेषतः ॥ पारायणेषु युक्तं स्यादन्यथा
विफला भवेत् ॥ १७॥ इति श्रीविश्वामित्रकल्पे
त्रिकालजपयोगो नाम सप्तमः परिच्छेदः ॥७॥
इति विश्वामित्रकृतगायत्रीकल्पः सम्पूर्णः ॥ ॥

अथ गायत्रीपद्धतिः ।

ब्रह्मविष्णुशिवाराध्यां गायत्रीं लोकपावनीम् ॥ २०
नमस्कृत्यानुरोधेनालिखेय पद्धतिं क्रमात् ॥ १ ॥

साधकःब्राह्ममुहूर्त्ते चोत्थाय यथोक्तंशौचंकृत्वान
द्यादौस्नानंकृत्वाप्राणायामत्रयंकृत्वा अघ्यांतांसं
ध्यां कुर्यात्॥प्राणायामोयथा॥ॐभूः ॐभुवः ॐ
स्वःॐ महःॐ जनःॐतपः ॐ सत्यंॐतत्सवितु
र्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि ॥ धियोयोनःप्रचोद
यात्॥आपोज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्॥
प्रणवस्य ब्रह्माऋषिःगायत्रीच्छंदः परमात्मादेव
ता शरीरशुद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मणे नमः
शिरसि॥गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ परमात्मदेव
तायै नमः हृदये॥करसंपुटं कृत्वा समस्तदुरितक्ष

यार्थं न्यासं संकरिष्ये ॥ व्याहृतीनां जमदग्नि भरद्वाजात्रिगौतमकाश्यपविश्वामित्रवसिष्ठादि ऋषिभ्योनमः शिरसि॥सप्तार्चिरनिलसवितृप्रजापतिवरुणेंद्रविश्वेदेवदेवताभ्यो नमः मुखे ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगतीछंदोभ्यो नमः हृदि ॥ एवं करसंपुटं कृत्वा समस्तदुरितक्षयार्थे गायत्रीन्यासः ॥ गायत्र्या विश्वामित्र ऋषये नमः शिरसि॥ गायत्रीछंदसे नमः मुखे ॥ परमात्मदेवतायै नमःहृदये ॥ ॐ भूःनमःहृदये ॥ ॐ भुवः नमःमुखे॥ॐस्वःनमःदक्षांसे॥ॐ महः

नमः वामांसे ॥ ॐ जनः नमःदक्षिणोरौ ॥ॐतपः
नमःवामोरौ॥ॐ सत्यं नमः जठरे ॥ इतिव्याहृति
न्यासः॥ अथाक्षरन्यासः॥ॐतत् नमःगुल्फयोः॥
ॐ सं नमः पदपार्श्वयोः ॥ ॐवि नमः जान्वोः॥
ॐ तुं नमः पादमुखयोः ॥ ॐ वंनमः जंघयोः ॥
ॐ रेंनमः नाभौ ॥ॐ णिं नमःहृदये ॥ ॐ यं न
मःकंठे ॥ ॐ भं नमः हस्तयोः॥ॐ गौं नमःमणि
बंधयोः ॐ दें नमःकूर्पयोः ॥ ॐ वंनमः बाहु
मूलयोः॥ॐ स्यं नमः आस्ये ॥ ॐ धीं नमः नः
सापुटयोः ॥ ॐ मं नमः कपोलयोः॥ ॐहिंनमो

नेत्रयोः ॥ ॐ धिं नमः कर्णयोः ॥ ॐ यों नमः भ्रू
मध्ये॥ ॐ यों नमः मस्तके॥ ॐ नं नमः पश्चिम
वक्रे॥ ॐ प्रं नमः उत्तरवक्रे ॥ ॐ चा नमः दक्षिण
वक्रे ॥ ॐ दं नमः पूर्ववक्रे॥ ॐ यात् नमः उर्ध्ववक्रे ॥
इत्यक्षरन्यासः॥ अथ पदन्यासः ॥ ॐ तत् नमः
शिरसि ॥ ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये ॥ ॐ वरे
ण्यं नमः नेत्रयोः ॥ ॐ भर्गः नमः मुखे ॥ ॐ देव
स्य नमः जठरे ॥ ॐ धीमहि नमः हृदये ॥ ॐ धि
यः नमः नाभौ॥ ॐ यः नमः गुह्ये ॥ ॐ नः नमः जा
न्वोः ॥ ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः ॥ ॐ आपो

ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोमिति शिरसि
इति पदन्यासः॥अथ पादन्यासः॥ ॐ तत्सवितुर्व
रेण्यं नमः नाभ्यादिपादपर्यंतम् ॥ ॐ भर्गो देवस्य
धीमहि नमः हृदयादिनाभ्यंतम् ॥ ॐ धियो यो नः
प्रचोदयात् नमः मूर्धादिहृदयांतम्॥ ॐ परोरजसे
सावदोम् इति मूर्ध्नि विन्यस्य ॥ अथ षडंगन्यासः
ॐ ब्रह्मणे हृदयायनमः ॐ विष्णवे शिरसे स्वाहा॥
ॐ रुद्राय शिखायै वषट् ॥ ॐ ईश्वराय कवचाय हु
म् ॥ॐ सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ सर्वात्म
ने अस्त्राय फट्। इति मंत्रेणोर्ध्वाधस्तालत्रयं कृत्वा

गा. छोटिकमुद्रया दिग्बंधनं विधाय मूलेन व्यापकं वि.
२३ कुर्य्यात् ॥ इति षडंगम् ॥ अथ लयांगन्यासः ॥ २
ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं
अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं
तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं॥
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीम
हि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ क्षं ळं हं सं षं
शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं
टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं २३
एं ॡं ऌं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं तयाञ्चोप्र

नः योयोधिहिमधीस्यवदेगौंभण्यंरेर्वतुवित्स
तस्वःवः र्भुभू ॐ इति हृदयादिमुखांतम् ॥ एव
मेव हृदयादिकेशांतम् ॥ तथैव व्याप्य ॥
इति लयांगन्यासः ॥ इति विन्यस्य पाठन्यासं
कुर्य्यात् ॥ ॐ मं मंडूकाय नमः मूलाधारे ॥
ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः स्वाधिष्ठाने ॥ ॐ मं
मूलप्रकृत्यै नमः नाभौ ॥ ॐ आं आधारशक्त
ये नमः हृदये ॥ कं कूर्माय नमः ॥ वं वराहाय
नमः ॥ धं धरिण्यै नमः ॥ सं सुधासिंधवे नमः ॥
रं रत्नद्वीपाय नमः ॥ मं मणिमंडपायनमः ॥ कं

कल्पवृक्षाय नमः ॥ स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः ॥
रं रत्नसिंहासनाय नमः दक्षांसे ॥ धं धर्माय नमः
वामांसे ॥ ज्ञां ज्ञानाय नमः वामोरौ ॥ वं वैराग्याय
नमः दक्षोरौ ॥ ऐं ऐश्वर्याय नमः मुखे ॥ अं अधर्माय
नमः वामपार्श्वे ॥ अं अज्ञानाय नमः दक्षपार्श्वे ॥
अं अवैराग्याय नमः नाभौ ॥ अं अनैश्वर्याय
नमः हृदये ॥ अं अनंताय नमः उपर्य्युपरि
विन्यसेत् ॥ अं अंबुजाय नमः ॥ सं संविन्नालाय
नमः ॥ सं सर्वतत्त्वात्मकाय पद्माय नमः ॥ प्रं प्र २४
कृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ विं विकारमयकेशरेभ्यो

नमः॥ पं पंचाशद्वर्णकर्णिकायै नमः॥ वं द्वादशक
लात्मने सूर्यमंडलाय नमः ॥ वं षोडशकलात्मने
चंद्रमंडलाय नमः॥सं सत्त्वात्मने नमः ॥ रं रजसे
नमः ॥ तं तमसे नमः ॥ आं आत्मने नमः ॥
अं अंतरात्मने नमः ॥ पं परमात्मने नमः ॥ ह्रां
दीप्तायै नमः ॥ ह्रीं सूक्ष्मायै नमः ॥ ह्रां विद्युता
यै नमः ॥ पीठमध्ये सर्वतोमुख्यै नमः ॥ तदु
परि नित्यपूजाचक्रं विधाय ॥ ॐ ब्रह्मविष्णु-
रुद्रांबिकात्मकाय सौरपीठात्मने नमः ॥ इति पी
ठन्यासः ॥ मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा मूलेन

गा. ॥ व्यापकं कृत्वा ध्यायेत्॥मुक्ताविद्रुमहेमनीलधव- ॥ प.
२५ ॥ लच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्तामिंदुनिबद्धरत्नमुकुटांत ॥ २
त्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥ गायत्रीं वरदाभयांकुशक
शां शुभ्रं कपालं गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं
हस्तैर्वहंतीं भजे। इति ध्यात्वा बहिः पूजोक्तरी-
त्या देवीं सौवर्णीं च संपूज्य गंधपुष्पधूपदीपनैवे
द्यतांबूलाद्युपचारान्प्रकल्प्य किंचिज्जपित्वा ॥
स्वागतं देवदेवेशि सन्निधौ मे महेश्वरि ॥ गृहा
ण मानसीं पूजां यथार्थपरिभाविताम् ॥ १ ॥ २५
दशधा मूलं जपित्वा जपं देव्याः करे समर्प्य

मनसा पुष्पांजलिं दत्त्वा क्षणं तदात्मकं विभाव्य
वरदाभयांकुशकशाकपालगुणशंखचक्राभयो
न्यादिमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥ इति मानसी पूजा ॥
अथ बहिःपूजार्थमनुज्ञाप्य बहिःपूजां कुर्य्यात् ॥
स्ववामे अस्त्रक्षालितत्रिपदिकां निधाय तदु
परि अस्त्रक्षालितं कलशं निधाय शुद्धतायं मू
लेनापूर्य्य मूलेनाष्टकृत्वोऽभिमंत्र्य जातवेदसे
इत्यृचा त्र्यंबकमिति ऋचगायत्र्या च सकृदभि
मंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत् ॥ इति कलशसं
स्थापनम् ॥ अथ सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः ॥

गा. तत्रास्त्रक्षालितं ताम्रपात्रं निधाय मूलेनापूर्य्य प.
२६ मूलेनाष्टवारं संमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां पूजयेत् ॥ २
इति सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः।पीठात्मनोर्मध्ये
चंदनेन कनिष्ठिकया त्रिकोणं षट्कोणं च
कृत्वा अग्नये हृदयाय नमः ॥ ईशानाय शिरसे
स्वाहा ॥ निर्ऋतये शिखायै वषट् ॥ वायवे कव
चाय हुम् ॥ अग्नये अस्त्राय फट् ॥ नेत्रत्रयाय
वौषट् ॥ पूर्वे अस्त्राय फट् ॥ सामान्यार्घ्यजले
न प्रोक्ष्य चंदनने पूजयेत् ॥ त्रिकोणे आधारं २६
स्थापयामि ॥ आं आधारशक्तिं स्थापयामि ॥

पृथिवीद्वीपं स्थापयामि ॥ तत्र पूजा ॥ अग्निमं
डलाय द्वादशकलात्मने नमः ॥ धुं धूम्रायै
नमः ॥ जं ज्वालिन्यै नमः ॥ विं विस्फुलिंगिन्यै
नमः ॥ सुं सुरूपायै नमः ॥ कं कपिलायै नमः॥
हं हव्यवाहनायै नमः ॥ कं कव्यवाहनायै
नमः ॥ इति आधार पूजा ॥ आधारोपरि अर्घ्यं
पात्रं संस्थाप्य पात्रोपरि पूजा ॥ अं अर्कमंड
लाय द्वादशकलात्मने नमः॥तं तापिन्यै नमः ॥
धुं धूम्रायै नमः ॥ मं मरीच्यै नमः ॥ जं ज्वा-
लिन्यै नमः ॥ रुं रुच्यै नमः॥ सुं सुमुखायै नमः॥

भों भोगदायै नमः ॥ विं विश्वायै नमः ॥ बों बो- प.
गा. धिन्यै नमः ॥ धां धारिण्यै नमः ॥ क्षं क्षमायै २
२७ नमः ॥ इत्यर्घ्यपात्रपूजा ॥ विलोममातृकामुच्चर
न् शुद्धजलमापूर्य॥ ॐ क्षं नमः ॥ प्रणवः सर्वत्र॥
ळं नमः ॥ हं नमः॥सं नमः॥ षं नमः ॥ शं नमः॥
वं नमः ॥ लं नमः ॥ रं नमः ॥ यं नमः ॥ मं
नमः ॥ भं नमः॥बं नमः॥ फं नमः ॥ पं नमः ॥ नं
नमः ॥ धं नमः ॥ दं नमः ॥ थं नमः ॥ तं नमः॥ २७
णं नमः ॥ ढं नमः ॥ डं नमः॥ठं नमः॥टं नमः ॥
ञं नमः ॥ झं नमः॥जं नमः॥छं नमः ॥चं नमः॥

ङं नमः॥घं नमः॥गं नमः ॥ खं नमः ॥ कं नमः॥
अः नमः ॥ अं नमः ॥ औं नमः ओं नमः ॥
ऐं नमः ॥ एं नमः ॥ ॡं नमः ॥ ऌं नमः ॥ ॠं
नमः ॥ ऋं नमः॥ऊं नमः ॥ उं नमः ॥ ईं नमः ॥
इं नमः ॥ आं नमः अं नमः ॥ तत्र पूजा ॥ सं
सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः ॥ अं अमृ
तायै नमः॥मं मानदायै नमः ॥ पूं पूषायै नमः॥
सं समृद्ध्यै नमः॥तुं तुष्ट्यै नमः ॥ पुं पुष्ट्यै नमः॥
रं रत्यै नमः ॥ज्यों ज्योत्स्नायै नमः ॥ श्रीं श्रियै
नमः ॥ कीं कीर्त्यै नमः ॥ अं अङ्गदायै नमः ॥

पूं पूर्णायै नमः ॥ १६ ॥ अंकुशमुद्रया तीर्थमा
वाह्य ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति॥
नर्मदे सिंधु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधौ भव ॥
योनिमुद्रां प्रदर्श्य धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य शंख
मुद्रां प्रदर्श्य गंधादिभिः संपूज्य मूलेनाष्टवारम
भिमंत्र्य मत्स्यमुद्रयाच्छाद्यसामान्यार्घ्यजलेन
सिंचेत् ॥ आत्मतत्त्वाय नमः ॥ विद्यातत्त्वाय
नमः ॥ शिवतत्त्वायै नमः ॥ परो रजसे सावदो
मिति सप्तकृत्वोऽभिमंत्र्य तज्जलदेवतात्मैक्यं
विभाव्य किंचित्पात्रांतरे गृहीत्वा पूजोपकरण

सामग्रीमात्मानं च त्रिः प्रोक्षयेत् ॥ इतिविशेषा र्घ्यस्थापनविधिः ॥ अर्घ्यस्योत्तरे पात्रचतुष्टयं पाद्याचमनीयमधुपर्कार्थं संस्थाप्यसकृदभिमंत्र्य तोयेनापूर्य्य मूलेन त्रिवारमाभिमंत्र्यन्यासक्रमेण धर्मादीन्प्रोक्षणीरूपेण संपूज्य तस्मिन्पीठोपरि देवतां विभाव्य सर्वांगेषु पंचपुष्पांजलिं दत्त्वामू लाधारात्कुंडलीमुत्थाप्य द्वारे स्थित्वा तत्रपरमा त्मना संयोज्य तदुद्भूयाऽमृतधारया देवीं प्रीण यित्वा देवीं प्रसन्नांविभाव्य स्वस्मिन्देव्यात्मैक्यं विभाव्यासनादिदीपान्तानुपचारान्प्रकल्प्य ॥

बाह्यनैवेद्यं न देयमिति संप्रदायः शिवो भूत्वाशिवं प.
गा. यजेदिति वचनात् ॥ अथ पीठपूजा ॥ मं मंडू- २
२९ काय नमः ॥ कं कालाग्निरुद्राय नमः ॥ मुंमूलप्रकृ
त्यै नमः ॥ आं आधारशक्त्यै नमः ॥ कूं कूर्मायै
नमः ॥ अं अनंताय नमः ॥ वं वराहाय नमः ॥
धं धरित्र्यै नमः ॥ सुं सुधासिंधवे नमः ॥ रं रत्न
द्वीपाय नमः ॥ मं मणिमंडपाय नमः ॥ कं कल्प
तरवे नमः ॥ स्वं स्वर्णवेदिकायै नमः ॥ तदुपरि
रत्नसिंहासनाय नमः ॥ आग्नेयादिकोणेषु धं २९
धर्माय नमः ॥ ज्ञं ज्ञानाय नमः ॥ वं वैराग्याय

नमः ॥ अं ऐश्वर्याय नमः ॥ पूर्वादिदिक्षु अं अधर्मा
य नमः ॥ अं अज्ञानाय नमः ॥ अं अवैराग्याय
नमः ॥ अं अनैश्वर्याय नमः ॥ मध्ये । अं अनंताय
नमः ॥ अं अंबुजाय नमः ॥ आं आनंदाय नमः ॥
सं संविन्नालाय नमः ॥ सं सर्वतत्त्वात्मकपद्माय
नमः ॥ पं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॥ विं विकार
मयकेशरेभ्यो नमः ॥ पं पंचाशद्वर्णकर्णिकायै
नमः ॥ अं द्वादशकलात्मने वह्निमंडलाय न
मः ॥ सं सत्त्वाय नमः ॥ रं रजसे नमः ॥ तं तमसे न
मः ॥ आं आत्मने नमः ॥ अं अंतरात्मने नमः ॥

गा. कं कालात्मने नमः ॥ एतान्युपर्युपरि ॥ अथ १.
३० पीठपूजा ॥ पीठस्य पूर्वभागे रां दीप्तायै नमः ॥ २
रीं सूक्ष्मायै नमः ॥ रूं भद्रायै नमः ॥ रैं विभूत्यै
नमः ॥ रौं विमलायै नमः ॥ रः अमोघायैनमः॥
रां विद्युतायैनमः ॥ पीठमध्ये । परदेवतायै नमः ॥
सर्वतो मुख्यै नमः ॥ तदुपरि बिंदुत्रिकोणावृत्तद
लाष्टकरेखात्मकं चतुरस्रं चतुर्द्वारोपशोभितं यंत्रं
संस्थाप्य ब्रह्मविष्णुरुद्रबिंबात्मकसौरपीठाय न
मः ॥ इति पीठं पूजयेत् ॥ इति पूजा समाप्ता ॥ ३०
अथ पूर्वोक्तऋष्यादिन्यासं कृत्वा प्राणानायम्य

मूलेनव्यापकंगायत्र्युच्चारपूर्वकं हस्ताभ्यां पुष्पांज
लिं गृहीत्वा नासारंध्रेण पुष्पसंचयकल्पितयंत्रम
ये कल्पितमूर्तिं निःक्षिप्य तत्तत्स्थानगतानि आ
वरणानि ध्यात्वा आवाहनादिमुद्राः प्रदर्श्यावाह
नं सन्निधापनं सन्निरोधनं सम्मुखीकरणम् अव
गुंठनं संकलीकरणं चेति । मूलांते श्रीगा
यत्रि देवि इहावाहिता भव पुष्पेण देव्या
हृदिकरं निधाय आं ह्रीं क्रौं इति द्वादशवारं
जपेत् । ततो भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां विधाय
पूजयेत् ॥ नमः इतिमंत्रेण देव्याः पादांबुजे पाद्यं

गा. दद्यात् । स्वाहेति मंत्रेण मूर्ध्न्यर्घ्यं वमिति मंत्रेण प.
३१ मुखेआचमनम् ततः स्नानशालायांसुगंधिसलि २
लैःस्नापयित्वा मूलेन शतसंख्येन वा राजोपचारैः
स्नापयित्वांगप्रोक्षणं कृत्वा मूलेन पीठं संस्थाप्य
पूर्वोक्तां ध्यात्वा पंचोपचारैः सम्पूज्य देवतां प्र
सन्नां विभाव्य आवरणपूजां कुर्य्यात् ॥ तत्र
मध्ये त्रिकोणे व्याहृत्यै नमः ॥ अथ कोणे
गायत्र्यै नमः ॥ नैर्ऋत्यकोणे सावित्र्यै नमः ॥
वायव्यकोणे सरस्वत्यै नमः ॥ त्रिकोणांत ३१
रालेषु ब्रह्मणे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ रुद्राय नमः ॥

मूलेन पुष्पांजलिं गृहीत्वा ॥ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावर्णार्चनम् ॥ अनेन पुष्पांजलिं दत्त्वा द्वितीयावरणं पूजयेत् ॥ अष्टदलेषु पूर्वादि दिक्षु ॐ आदित्याय नमः॥भानवे नमः॥भास्कारायनमः॥रवये नमः ॥ आग्नेयादिकेशरेषु ॥ उषायै नमः ॥ प्रभायै नमः प्रजायै नमः ॥ संध्यायै नमः ॥ मूलमुच्चरन् अभीष्टसिद्धिं मे देहीति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इतिद्वितीयावरणम् ॥ अथ तृतीयम् ॥ हृदि ब्रह्मणे नमः॥हृदयाय नमः ईशाने रुद्रायशि

गा.
३२

खायै वषट् ॥ नैर्ऋत्ये ईश्वराय कवचाय हुम् ॥ १.
वायव्ये सदाशिवाय नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ आग्ने २
ये सर्वात्मने अस्त्रायफट् ॥ तत्तद्देवताभ्यो नमः॥
मूलेन ॥ अभीष्ट० ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ अथ
चतुर्थम् ॥ तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदलेषु ॥ अमृतायै
नमः ॥ नित्यायै नमः ॥ विश्वंभरायै नमः ॥
ईशान्यै नमः ॥ प्रभायै नमः ॥ जयायै नमः ॥
विजयायै नमः ॥ शांत्यै नमः॥मूलेन पुष्पांजलिं
अभीष्टसिद्धिं० ॥ इति चतुर्थावरणम् ॥ अथ ३२
पंचमम् ॥ तद्बहिः पूर्वाद्यष्टदिक्षु॥ॐ कांत्यै नमः॥

दुर्गायै नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ विद्यारूपायै नमः ॥ विशालायै नमः ॥ ईशानायै नमः ॥ वायव्यै नमः ॥ विमलायै नमः ॥ मूलमुच्चरन्न भीष्टसिद्धिमिति पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति पंचमावरणम् ॥ अथ षष्ठम् ॥ पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ संहारिण्यै नमः ॥ सूक्ष्मायै नमः ॥ विश्वयोन्यै नमः ॥ जयावहायै नमः ॥ पद्मालयायै नमः ॥ परायै नमः ॥ शोभायै नमः ॥ रूपायै नमः ॥ मूलेन पुष्पांजलिम् अभीष्टसिद्धिं० ॥ इति षष्ठा वरणम ॥ अथ सप्तमम् ॥ पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ ॐ आं

ब्राह्म्यै नमः ॥ ॐ ईं माहेश्वर्यै नमः ॥ ॐ ऊं कौ
मार्यै नमः॥ ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः॥ ॐ ॡं वाराह्यै न
मः ॥ ॐ औं चामुंडायै नमः॥ ॐ अः चंडिकायै
नमः ॥ मूलमुच्चार्य अभीष्ट० पुष्पांजलिं दद्यात
इति सप्तमावरणम् ॥ अथाष्टमावरणम् ॥तद्बहिः
पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ ॐ सों सोमाय नमः ॥ ॐ बुं
बुधाय नमः॥ॐ शुं शुक्राय नमः॥ॐ भौं भौमा
य नमः ॥ ॐ शं शनैश्चराय नमः॥ॐ रां राहवे
नमः॥ॐ कें केतवे नमः ॥ मूलेन अभीष्ट० पुष्पां
जलिं दद्यात ॥ इत्यष्टमावरणम् ॥ अथ नवमम् ॥

पूर्वाद्यष्टदिक्षु ॥ ॐ लं इंद्राय नमः ॥ॐ रं अग्नये
नमः॥ॐ यं यमाय नमः ॥ॐ क्षं नैर्ऋत्यै नमः ॥
ॐ वं वरुणाय नमः ॥ ॐ यं वायवे नमः॥ ॐ सं
सोमाय नमः ॥ ॐ ईं ईशानाय नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे
नमः॥ॐ अनंताय नमः ॥ मूलेन अभीष्ट० पुष्पां
जलिं दद्यात॥ इति नवमावरणम्॥ अथ दशमम् ॥
ॐ वं वज्राय नमः ॥ ॐ शं शक्तये नमः॥ ॐ दं
दंडाय नमः ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ॐ पं पा
शाय नमः ॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ॐ त्रिं
त्रिशूलाय नमः ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥

ॐ अं अंबुजाय नमः ॥ मूलेन अभीष्ट०
पुष्पांजलिं दद्यात् ॥ इति दशमावरणम् ॥
पुनः पंचोपचारैः संपूज्य नीराजनं पुष्पांजलिं
दत्त्वा यस्य स्मृत्येति पूजां समर्प्य जपफलं
देव्याः करे समर्प्य पुष्पांजलिं दत्त्वा क्षमाप्य स्वहृ
दि उद्वास्य पुनर्ऋष्यादि न्यासं कृत्वा निर्माल्यं वि
सृजेत् ॥ इति नित्यपूजापद्धतिः समाप्ता ॥ अथ
नैमित्तिकमाह ॥ गुरुजन्मदिवसे स्वजन्मदिवसे ज
न्मनक्षत्रे विद्याप्राप्तिदिवसे पूर्णायां व्यतीपाते वा
विशेषं पूजयेत् ॥ इति नैमित्तिकम् ॥ अथ पुरश्च

रणविधिः ॥ कर्ता स्वशक्त्या गुरुं संपूज्य तदनु
ज्ञया देहशुद्ध्यर्थं चांद्रायणं प्राजापत्यं वा समा
चरेत् । पुरश्चरणदिवसे सुगंधसलिलैः स्नात्वा पू
जाप्रदेशे चतुरस्रं चतुर्द्वारं मंडपं विधाय हृष्टधी
र्वाङ्नियमितो मिताहारो जितेंद्रियः प्रातरारभ्या
मध्याह्नं जपेत । एवं च चतुर्विंशतिलक्षं जपेत् ॥
तदुक्तम् ॥ उक्तलक्षविधानेन कृत्वा विप्रा जिते
न्द्रियाः॥ क्षीरौदनं तिलं दूर्वांक्षीरद्रुमसमिद्गमान्॥
अष्टद्रव्येण च पृथक्सहस्रत्रितयं हुनेत् ॥ मंत्र
फलसिद्ध्ये जपदशांशहोमः ॥ तद्दशांशेन तर्प

णम् ॥ तद्दशांशेन मार्जनम् ॥ तद्दशांशेन ब्राह्मण
भोजनम् ॥ इति पुरश्चरणविधिः ॥ अथका
म्यमुच्यते ॥ विद्यार्थी वाग्भवाद्यां लक्ष्मी
कामः श्रीबीजं वश्यार्थे कामबीजं सर्व
कामार्थे मायाबीजम् आयुःकामार्थे मृत्युंजय
चतुरक्षरीसहितं जपेत्॥इतिका० विधिः ॥ तत्त्व
संख्यासहस्राणि समंत्रं जुहुयात्तिलैः ॥ सर्वपाप
विनिर्मुक्तो दीर्घमायुश्च विंदति ॥ आयुष्यं सा
ज्यहविषा केवलेनाथ सर्पिषा ॥ पर्वांकितैस्ति
लैर्मंत्री जुहुयात्त्रिसहस्रकम् ॥ अरुणाक्षैस्त्रिम

ध्वाज्यैः प्रसूनैर्ब्रह्मवृक्षजैः ॥ बहुना किमिहोक्तेन
यथावत्साधु साधिता ॥ द्विजन्मनामियं विद्या
सिद्धकामदुहा स्मृता ॥ इति गायत्रीपद्धतिः
संपूर्णा ॥ ॥ छ ॥

## अथ गायत्र्युपनिषत् ॥

नमस्कृत्य भगवान् याज्ञवल्क्यः स्वयं परिपृच्छ
ति त्वं ब्रूहि भगवन् गायत्र्या उत्पत्तिं श्रोतुमि
च्छामि ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रणवेन व्याहृतयः प्रवर्त
ते तमसस्तु परं ज्योतिष्कः पुरुषः स्वयम् ॥
भूर्विष्णुरिति ह ताः स्वांगुल्या मथेत् । मथ्यमा

नात्फेनो भवति फनाद्बुद्बुदो भवति बुद्बुदादंडं
भवति अंडवानात्मा भवति आत्मनः आका
शो भवति आकाशाद्वायुर्भवति वायोरग्निर्भवति
अग्नेरोंकारो भवति ॐकाराद्व्याहृतिर्भवति व्या
हृत्या गायत्री भवति गायत्र्याः सावित्री
भवति सावित्र्याः सरस्वती भवति सरस्व
त्या वेदा भवंति वेदेभ्यो ब्रह्मा भवति
ब्रह्मणो लोका भवंति तस्माल्लोकाः प्रव
र्त्तंते चत्वारो वेदाः सांगाः सोपनिषदः सेतिहा
सास्ते सर्वे गायत्र्याः प्रवर्त्तंते यथाग्निर्देवानां ब्रा

हंसो मनुष्याणां मेरुः शिखरिणां गंगा नदीनां
वसंत ऋतूनां ब्रह्मा प्रजापतीनामेवासौ मुख्यः
गायत्र्या गायत्री छंदो भवति किं भूः किं भुवः
किं स्वः किं महः किं जनः किं तपः किं सत्यं
किं तत् किं सवितुः किं वरेण्यं किं भर्गः किं देव
स्य किं धीमहि किं धियः किं यः किं नः किं प्रचो
दयात् । भूरिति भूर्लोकः भुव इत्यंतरिक्षलोकः
स्वरिति स्वर्लोकः मह इति महर्लोकः जन इति
जनो लोकः तप इति तपो लोकः सत्यमिति स
त्यलोकः ॥ भूर्भुवः स्वरोमिति त्रैलोक्यम् ॥

तदसौ तेजः यत्तेजसोग्निर्देवता सवितुरित्या
दित्यस्य वरेण्यमित्यन्नम् ॥ अन्नमेव प्रजापतिः
भर्ग इत्यापः॥आपो वै भर्गः एतावत्सर्वा देवताः
देवस्येंद्रो वै देवयीद्देवं सदिंद्रस्तस्मात्सर्वंकृत
पुरुषो नाम विष्णुः । धीमहि किमध्यात्मं
तत्परमं पदमित्यध्यात्मं यो न इति पृथिवी
वै यो नः प्रचोदयात् काम इमाँल्लोकान्
प्रच्यवयन् यो नृशंस्योस्तोष्यस्तत्परमो धर्मः
इत्येषा गायत्री किंगोत्रा कत्यक्षरा कति ३७
पदा कतिकुक्षिः कतिशीर्षाणि ॥ सांख्यायन

सगोत्रा गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट्
कुक्षिः सावित्री केशास्त्रयः पादा भवंति ॥ का
स्याः कुक्षिः कानि पंच शीर्षाणि ऋग्वेदोऽस्याः
प्रथमः पादो भवति यजुर्वेदो द्वितीयः सामवेद
स्तृतीयः पूर्वा दिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति दक्षिणा
द्वितीया पश्चिमा तृतीया उदीची चतुर्थी
ऊर्ध्वा पंचमी अधरा षष्ठी कुक्षिः । व्याकरण
मस्याः प्रथमं शीर्षं भवति शिक्षा द्वितीयं क
ल्पस्तृतीयं निरुक्तं चतुर्थं ज्योतिषामयनं पंच
मम॥ किं लक्षणं किमु चेष्टितं किमुदाहृतं किमक्ष

गा. रं दैवत्यम् ॥ लक्षणं मीमांसा अथर्ववेदो विचे उ.
३८ ष्टितम् छंदोविधिरित्युदाहृतम् ॥ को वर्णः कः ३
स्वरः । श्वेतो वर्णः षट् स्वराणि इमान्यक्षराणि
दैवतानि भवंति पूर्वा भवति गायत्री मध्यमा
सावित्री पश्चिमा संध्या सरस्वती ॥ प्रातःसंध्या
रक्ता रक्तपद्मासनस्था रक्तांबरधरा रक्तवर्णा
रक्तगंधानुलेपना चतुर्मुखा अष्टभुजा द्विने
त्रा दंडाक्षमालाकमंडलुस्रुक्स्रुवधारिणी सर्वा
भरणभूषिता गायत्री कौमारी ब्राह्मी हंसवा ३८
हिनी ऋग्वेदसंहिता ब्रह्मदैवत्या त्रिपदा गायत्री

षट्कुक्षिः पंचशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिवविष्णु
हृदया ब्रह्मकवचा सांख्यायनसगोत्रा भूर्लोक
व्यापिनी अग्निस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वर
मकारः आत्मज्ञाने विनियोगः ॥ इत्येषा गायत्री
॥ मध्याह्नसंध्या श्वेता श्वेतपद्मासनस्था श्वेतांबर
धरा श्वेतगंधानुलेपना पंचमुखी दशभुजा त्रिने
त्रा शूलाक्षमालाकमंडलुकपालधारिणी सर्वाभर
णभूषिता सावित्री युवती माहेश्वरी वृषभवाहि
नी यजुर्वेदसंहिता रुद्रदेवत्या त्रिपदा सावित्री
षट्कुक्षिः पंचशीर्षा अग्निमुखा रुद्रशिखा ब्रह्म

गा. कवचा भारद्वाजसगोत्रा भुवर्लोकव्यापिनी वा उ.
३१ युस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरितस्वरमुकारः श्वेत ३
वर्णः आत्मज्ञाने विनियोगः ॥ इत्येषा सावित्री॥
सायंसंध्या कृष्णा कृष्णपद्मासनस्था कृष्णांबर
धरा कृष्णवर्णा कृष्णगंधानुलेपना कृष्णमाल्यां
बरधरा एकमुखी चतुर्भुजा द्विनेत्रा शंखचक्र
गदापद्मधारिणी सर्वाभरणभूषिता सरस्वती वृद्धा
वैष्णवी गरुडवाहिनी सामवेदसंहिता विष्णुदेव
त्या त्रिपदा षट्कुक्षिः पंचशीर्षा अग्निमुखा विष्णु ३१
हृदया रुद्रशिखा ब्रह्मकवचा काश्यपसगोत्रा स्व

लोंकव्यापिनी सूर्यस्तत्त्वम् उदात्तानुदात्तस्वरित
मकारः कृष्णवर्णो मोक्षज्ञाने विनियोगः इत्येषासर
स्वती ॥ रक्ता गायत्री श्वेता सावित्री कृष्ण
वर्णा सरस्वती ॥ प्रणवो नित्ययुक्तश्च व्याहृतीषु
च सप्तसु ॥ सर्वेषामेव पापानां संकरे समुप
स्थिते ॥ दश शतं समभ्यर्च्य गायत्री पावनी
महत् ॥ प्रह्लादोऽत्रिर्वशिष्ठश्च शुकः कण्वः पराशरः
विश्वामित्रो महातेजाः कपिलः शौनका
महान् ॥ याज्ञवल्क्यो भरद्वाजो जमदग्निस्तपो
निधिः ॥ गौतमो मुद्गलः श्रेष्ठो वेदव्यासश्चलो

गा.
०६

मशाः॥अगस्त्यः कौशिको वत्सः पुलस्त्या मांडु
कस्तथा ॥ दुर्वासास्तपसा श्रेष्ठो नारदः कश्य
पस्तथा ॥ उक्तात्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठान्या
सुपूर्विका ॥ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्चबृहती पंक्तिरेव
च ॥ त्रिष्टुप् च जगती चैव तथातिजगती
मता ॥ शक्करी सातिपूर्वा स्यादष्ट्यत्यष्टी तथै
व च॥धृतिश्चातिधृतिश्चैव प्रकृतिः कृतिराकृतिः॥
विकृतिः संकृतिश्चैव तथातिकृतिरुत्कृतिः ॥
इत्येताश्छंदसां संज्ञाः क्रमशो वच्मि सांप्रतम् ॥ ४०
भूरिति च्छंदो भुव इति च्छंदः स्वरिति च्छंदो

भूर्भुवः स्वरोमिति देवी गायत्री इत्येता
नि च्छंदांसि प्रथममाग्नेयं द्वितीयं प्राजापत्यं
तृतीयं सौम्यं चतुर्थमैशानं पंचमामादित्यं षष्ठं
बार्हस्पत्यं सप्तमं पितृदेवत्यमष्टमं भगदेवत्यं न
वममार्यमं दशमं सावित्रमेकादशं त्वाष्ट्रं द्वादशं
पौष्णं त्रयोदशमैन्द्राग्न्यं चतुर्दशं वायव्यं पंच
दशं वामदेवत्यं षोडशं मैत्रावरुणं सप्तदशमां
गिरसमष्टादशं वैश्वदेव्यमेकोनविंशं वैष्णवं विंशं
वासवमेकविंशं रौद्रं द्वाविंशमाश्विनं त्रयोविंशं
ब्राह्मं चतुर्विंशं सावित्रम ॥ दीर्घान्स्वरेण

गा. संयुक्तान्बिन्दुनादसमन्वितान् ॥ व्यापका उ.
४१ न्विन्यसेत्पश्चाद्दशपंक्त्यक्षराणिच ॥ ढबुंपुस २
इति प्रत्यक्षबीजानि ॥ प्रह्लादिनी प्रभा सत्या वि
श्वा भद्रा विलासिनी ॥ प्रभावती जया कांता
शांता पद्मा सरस्वती ॥ विद्रुमस्फटिकाकारं
पद्मरागसमप्रभम् ॥ इंद्रनीलमणिप्रख्यं मौक्ति
कं कुंकुमप्रभम् ॥ अञ्जनाभं च गांगेयं वैदूर्यं
चंद्रसन्निभम् ॥ हारिद्रं कृष्णदुग्धाभं रविकांतिस
मं भवम् ॥ शुकपिच्छसमाकारं क्रमेण परिकल्प ४१
येत ॥ पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश एव च

॥ गंधो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शस्तथैव च ॥ घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक्छ्रोत्रं च तथापरम् ॥ उपस्थपायुपादादि पाणिर्वागपि च क्रमात् ॥ मनो बुद्धिरहंकारमव्यक्तं च यथाक्रमम् ॥ सुमुखं संपुटं चैव विततं विस्तृतं तथा ॥ एकमुखं च द्विमुखं त्रिमुखं च चतुर्मुखम् ॥ पंचमुखं षण्मुखं चाधोमुखं चैव व्यापकम् ॥ अंजलीकं ततः प्रोक्तं मुद्रितं तु त्रयोदशम् ॥ शकटं यमपाशं च ग्रंथितं संमुखोन्मुखम् ॥ प्रलंबं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम् ॥ सिंहाक्रां

गा. तं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ एता मुद्राश्च उ.
४२ तुर्विंशद्गायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः ॥ ॐ मूर्ध्नि संघाते ३
ब्रह्मा विष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये चक्षुषोश्चंद्रा
दित्यौ कर्णयोः शुक्रबृहस्पती नासिके वायुदैवत्यं
प्रभातं दोषा उभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्व
ती ग्रीवा स्वाध्यायास्तनयोर्वसवः बाह्वोर्मरुतः
हृदयं पर्जन्यमाकाशमपरं नाभिरंतरिक्षं कटि
रिंद्रियाणि जघनं प्राजापत्यं कैलासमलयौ
ऊरू विश्वेदेवा जानुभ्यां जान्वोः कुशिकौ ४२
जंघयोरयनद्वयं खुराः पितरः पादौ पृथिवी

वनस्पतिः गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतु
मासा ऋतवः संध्याकालत्रयमाच्छादनं संव
त्सरो निमिषः अहोरात्रादित्यश्चंद्रमाः सहस्रप
रमां देवीं शतमध्यां दशापराम् ॥ सहस्रनेत्रीं
देवीगायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये ॥ तत्सवितुर्वरदाय
नमः तत्प्रातरादित्याय नमः ॥ सायमधीयानो
दिवसकृतं पापं नाशयति प्रातरधीयानो रात्रि
कृतं पापं नाशयति तत्सायं प्रातः प्रयुंजानो
अपापो भवति य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रय
तः पठेत् चत्वारो वेदा अधीता भवंति सर्वेषु ती

गा. तं महाक्रांतं मुद्गरं पल्लवं तथा ॥ एता मुद्राश्च उ.
४२ तुर्विंशद्गायत्र्याः सुप्रतिष्ठिताः ॥ ॐ मूर्ध्नि संघाते ३
ब्रह्मा विष्णुर्ललाटे रुद्रो भ्रूमध्ये चक्षुषोश्चंद्रा
दित्यौ कर्णयोः शुक्रबृहस्पती नासिके वायुदैवत्यं
प्रभातं दोषा उभे संध्ये मुखमग्निर्जिह्वा सरस्व
ती ग्रीवा स्वाध्यायास्तनयोर्वसवः बाह्वोर्मरुतः
हृदयं पर्जन्यमाकाशमपरं नाभिरंतरिक्षं कटि
रिंद्रियाणि जघनं प्राजापत्यं कैलासमलयौ
ऊरू विश्वेदेवा जानुभ्यां जान्वोः कुशिकौ ४२
जंघयोरसनत्तयम् सुराः पितरः पादौ पृथिवी

वनस्पतिः गुल्फौ रोमाणि मुहूर्तास्ते विग्रहाः केतु
मासा ऋतवः संध्याकालत्रयमाच्छादनं संव
त्सरो निमिषः अहोरात्रादित्यश्चंद्रमाः सहस्रप
रमां देवीं शतमध्यां दशापराम् ॥ सहस्रनेत्री
देवीगायत्री शरणमहं प्रपद्ये ॥ तत्सवितुर्वरदाय
नमः तत्प्रातरादित्याय नमः ॥ सायमधीयानो
दिवसकृतं पापं नाशयति प्रातरधीयानो रात्रि
कृतं पापं नाशयति तत्सायं प्रातः प्रयुंजानो
अपापो भवति य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रय
तः पठेत् चत्वारो वेदा अधीता भवंति सर्वेषु ती

थेषु स्नातो भवति सर्वैर्देवैर्ज्ञातो भवति सर्वप्रति
प्रत्यूहात्पूतो भवति अपेयपानात्पूतो भवति
अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति अलेह्यलेहात्पूतो
भवति अचोष्यचोषणात्पूतो भवति ॥ सुरापा
नात्पूतो भ० ॥ सुवर्णस्तेयात्पूतो भव० ॥ पंक्ति
भेदनात्पूतो भ० ॥ पतितसंभाषणात्पूतो भ० ॥
अनृतवचनात्पूतो भ० ॥ गुरुतल्पगमनात्पूतो
भ० ॥ अगम्यागमनात्पूतो भ० ॥ वृषलीगम
नात्पूतो भ०॥ ब्रह्महत्यायाः पूतो०॥ भ्रूणहत्यायाः
पूतो० ॥ वीरहत्यायाः पूतो० ॥ अब्रह्म

चारी सुब्रह्मचारी भवति ॥ अनेन हृदयेनाधीतेन
क्रतुशतेनेष्टं भवति षष्टिसहस्रगायत्रीजप्यानि
भवंति ॥ अष्टौ ब्राह्मणान्ग्राहयेत अर्थसिद्धिर्भ
वति ॥ य इदं गायत्रीहृदयं ब्राह्मणः प्रयतः पठेत् ॥
सर्वपापैः प्रमुच्यते ब्रह्मलोके महीयते ब्राह्मलोके
महीयत इति ॥ इति गायत्र्युपनिषत्संपूर्णा ॥

अथ गायत्रीतत्त्वप्रारम्भः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगायत्र्यै नमः ॥

श्रीगायत्रीतत्त्वमालामंत्रस्य विश्वामित्र ऋषिः ॥
अनुष्टुप् छन्दः ॥ परमात्मा देवता । हलो बीजानि

स्वराः शक्तयः ॥ अव्यक्तं कीलकम् ॥ मम
समस्तपापक्षयार्थे गायत्रीतत्त्वपाठे विनियोगः॥
चतुर्विंशतितत्त्वानां यदेकं तत्त्वमुत्तमम् ॥ अनु
पाधि परं ब्रह्म तत्परं ज्योतिरोमिति ॥ १ ॥ यो
वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदांते च प्रतिष्ठितः ॥ तस्य
प्रकृतिलीनस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥ २ ॥ तत्स
दादिपदैर्वाच्यं परमं पदमव्ययम् । अभेदत्वं
पदार्थस्य तत्परं ज्योतिरोमिति ॥ ३ ॥ यस्य मा
यांशभागेन जगदुत्पद्यतेऽखिलम् ॥ तस्य सर्वोत्तमं
रूपमस्मयाभिधीमहि ॥ ४ ॥ यं न पश्यन्ति

परमं पश्यंतोपि दिवौकसः ॥ तं भूतानिलदेवं तु सुपर्णमुपधावताम् ॥५॥ यदंशः प्रेरितो जंतुः कर्म पाशनियंत्रितः ॥ आजन्मकृतपापानामपहंतुं दिवौकसः ॥ ६ ॥ इदं महामुनिप्रोक्तं गायत्रीतत्त्वमुत्तमम् ॥ यः पठेत्परया भक्त्या स याति परमां गतिम् ॥७॥ सर्ववेदपुराणेषु सांगोपांगेषु यत्फलम् ॥ सकृदस्य जपादेव तत्फलं प्राप्नुयान्नरः ॥८॥ अभक्ष्यभक्षणात्पूतो भवति ॥ अगम्यागमनात्पूतो भवति ॥ सर्वपापेभ्यः पूतो भवति ॥ प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥ सायमधी

गा. ४५ यानो दिवसकृतं पापं नाशयति ॥ मध्यंदिनमु क. ५
पयुंजानोऽसत्प्रतिग्रहादिना मुक्तो भवति ॥ अ
नुपूर्वं पुरुषा पुरुषमभिवदंति ॥ यंयं काममभि
ध्यायतितंतमेवाप्नोति पुत्रपौत्रान्कीर्तिसौभाग्यां
श्चोपलभते ॥ सर्वभूतात्ममित्रो देहांते तद्दिशि
ष्टो गायत्रीपरमं पदमवाप्नोति ॥ इति श्रीवेद
सारे गायत्रीतत्त्वं संपूर्णम् ॥

॥ अथ गायत्रीकवचप्रारम्भः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ याज्ञवल्क्य ४५
उवाच ॥ ॥ स्वामिन्सर्वजगन्नाथ संशयोस्ति

महान्मम ॥ चतुष्षष्टिकलानां च पातकानां च
तद्वद ॥ १ ॥ मुच्यते केन पुण्येन ब्रह्मरूपं कथं
भवेत् ॥ देहश्च देवतारूपं मंत्ररूपं विशेषतः ॥ २ ॥
क्रमतः श्रोतुमिच्छामि कवचं विधिपूर्वकम् ॥
ब्रह्मोवाच ॥ गायत्र्याः कवचस्यास्य ब्रह्मा
विष्णुः शिवो ऋषिः ॥ ३ ॥ ऋग्यजुःसामाथ
र्वाणि च्छंदांसि परिकीर्त्तिताः ॥ परब्रह्मस्वरूपा
सा गायत्री देवता स्मृता ॥४॥ रक्षाहीनं तु यत्स्था
नं कवचेन विना कृतम् ॥ सर्वं सर्वत्र संरक्षेत्स
र्वांगं भुवनेश्वरी ॥ ५ ॥ बीजं भर्गश्च युक्तिश्च

गा. धियः कीलकमेव च ॥ पुरुषार्थविनियोगो यो क.
४६ नश्च परीकीर्तितः ॥ ६ ॥ ऋषिं मूर्ध्नि न्यसेत्पूर्वं ५
मुखे छंद उदीरितम् ॥ देवता हृदि विन्यस्य गुह्ये
बीजं नियोजयेत् ॥ ७ ॥ शक्तिं पदोऽस्तु विन्यस्य
नाभौ तु कीलकं न्यसेत ॥ द्वात्रिंशत्तु महाविद्याः
सांख्यायनसगोत्रजाः ॥ ८ ॥ द्वादशलक्षसंयुक्ता
विनियोगः पृथक्पृथक् ॥ एवं न्यासविधिं कृत्वा
करांगं विधिपूर्वकम् ॥ ९ ॥ व्याहृतित्रयमुच्चार्य
अनुलोमविलोमतः ॥ चतुरक्षरसंयुक्तं करांगन्या ४६

समाचरेत ॥ १० ॥ आवाहनादिमंदं च दश मुद्राः

प्रदर्शयेत ॥ सा पातु वरदा देवी अंगप्रत्यंगसं
गमे ॥ ११ ॥ ध्यानं मुद्रां नमस्कारं गुरुमंत्रं
तथैव च ॥ संयोगमात्मसिद्धिञ्च षड्विधं किं
विचारयेत् ॥ १२ ॥ अस्य श्रीगायत्रीकवचस्य
ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः ऋग्यजुःसामाथर्वाणि च्छं
दांसि परब्रह्मस्वरूपिणी गायत्री देवता भूः बीजं
भुवः शक्तिः स्वाहा कीलकं श्रीगायत्रीप्रीत्यर्थं
जपे विनियोगः ॥ वर्णास्त्रां कुंडिकाहस्तां
शुद्धनिर्मलज्योतिषीम् ॥ सर्वतत्त्वमयीं वन्दे
गायत्रीं वेदमातरम् ॥ १३ ॥ अथ ध्यानम् ॥

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैर्युक्ता
मिंदुनिबद्धरत्नमुकटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम् ॥
गायत्रीं वरदाभयांकुशकशां शूलं कपालं
गुणं शंखं चक्रमथारविंदयुगलं हस्तैर्वहंतीं
भजे ॥ १ ॥ ॐ गायत्री पूर्वतः पातु सावित्री
पातु दक्षिणे ॥ ब्रह्मविद्या च मे पश्चादुत्तरे मां स
रस्वती ॥ १ ॥ पावकीं मे दिशं रक्षेत्पावकोज्ज्व
लशालिनी ॥ यातुधानीं दिशं रक्षेद्यातुधानगणा
र्दिनी ॥ २ ॥ पावमानीं दिशं रक्षेत्पवमानविलासि
नी ॥ दिशं रौद्रीमवतु मे रुद्राणी रुद्ररूपिणी ॥ ३ ॥

ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥
एवं दश दिशो रक्षेत्सर्वतो भुवनेश्वरी ॥ ४ ॥
ब्रह्मास्त्रस्मरणादेव वाचां सिद्धिः प्रजायते ॥ ब्रह्म
दण्डश्च मे पातु सर्वशस्त्रास्त्रभक्षकः ॥ ५ ॥ ब्रह्म
शीर्षस्तथा पातु शत्रूणां वधकारकः ॥ सप्त व्या
हृतयः पांतु सर्वदा बिंदुसंयुताः ॥ ६ ॥ वेदमाता
च मां पातु सरहस्या सदैवता ॥ देवीसूक्तं सदा
पातु सहस्राक्षरदेवता ॥ ७ ॥ चतुष्पष्टिक
लाविद्या दिव्याद्या पातु देवता ॥ बीजश
क्तिश्च मे पातु पातु विक्रमदेवता ॥ ८ ॥ तत्पदं

गा. पातु मे पादौ जंघे मे सवितुः पदम् ॥ वरेण्यं कटि क.
८ देशं तु नाभिं भर्गस्तथैव च ॥ ९ ॥ देवस्य मे तु ५
हृदयं धीमहीति गलं तथा ॥ धियो मे पातु जि
ह्वायां यः पदं पातु लोचने ॥ १० ॥ ललाटे नः
पदं पातु मूर्द्धानं मे प्रचोदयात् ॥ तद्वर्णः पातु
मूर्द्धानं सकारः पातु भालकम् ॥ ११ ॥ चक्षुषी
मे विकारस्तु श्रोत्रं रक्षेत्तु कारकः ॥ नासापुटे
वकारो मे रेकारस्तु कपोलयोः ॥ १२ ॥ णिकार
स्त्वधरोष्ठे च यकारस्तूर्ध्व ओष्ठके ॥ आस्यम ४८
ध्ये भकारस्तु गोकारस्तु कपोलयोः ॥ १३ ॥

देकारः कंठदेशे च वकारः स्कंधदेशयोः ॥
स्यकारो दक्षिणं हस्तं धीकारो वामहस्तकम् १४॥
मकारो हृदयं रक्षेद्धिकारो जठरं तथा ॥ धिका
रो नाभिदेशं तु योकारस्तु कटिद्वयम् ॥ १५ ॥
गुह्यं रक्षतु योकार ऊरू मे नःपदाक्षरम्॥प्रकारो
जानुनी रक्षेच्चोकारो जंघदेशयोः ॥ १६ ॥ दकारो
गुल्फदेशं तु यात्कारः पादयुग्मकम् ॥ जातवेदे
ति गायत्री त्र्यंबकेति दशाक्षरा ॥ १७ ॥ सर्वतः
सर्वदा पातु आपो ज्योतीति षोडशी ॥ इदं तु
कवचं दिव्यं बाधाशतविनाशकम् ॥ १८ ॥ चतु

गा. षष्टिकलाविद्यासकलैश्वर्य्यसिद्धिदम् ॥ जपारंभे क.
४९ च हृदयं जपांते कवचं पठेत् ॥ १९ ॥ स्त्रीगोब्राह्मण ५
मित्रादिद्रोहाद्यखिलपातकैः ॥ मुच्यते सर्वपा
पेभ्यः परं ब्रह्माधिगच्छति ॥ २० ॥ पुष्पांजलिं
च गायत्र्या मूलेनैव पठेत्सकृत् ॥ शतसाहस्त्रव
र्षाणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥ २१ ॥ भूर्जपत्रे
लिखित्वैतत्स्वकंठे धारयेद्यदि ॥ शिखायां दक्षिणे
बाहौ कंठे वा धारयेद्बुधः ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यं
क्षोभयेत्सर्वं त्रैलोक्यं दहति क्षणात् ॥ पुत्रबान्ध ४९
नवाञ्छ्रीमान्नानाविद्यानिधिर्भवेत् ॥ २३ ॥

ब्रह्मास्त्रादीनि सर्वाणि तदंगस्पर्शनात्ततः ॥
भवंति तस्य तुच्छानि किमन्यत्कथयामि
ते ॥ २४ ॥ अभिमंत्रितगायत्रीकवचं मानसं
पठेत् ॥ तज्जलं पिबतो नित्यं पुरश्चर्य्याफलं
भवेत् ॥ २५ ॥ लघुसामान्यकं मंत्रं महामंत्रं
तथैव च ॥ यो वेत्ति धारणां युञ्जञ्जीवन्मुक्तः
स उच्यते ॥ २६ ॥ सप्तव्याहृतिविप्रेन्द्रसप्ता
वस्थाः प्रकीर्तिताः ॥ सप्तजीवशता नित्यं व्याहृती
अग्निरूपिणी ॥ २७ ॥ प्रणवे नित्ययुक्तस्य व्याहृ
तीषु च सप्तसु ॥ सर्वेषामेव पापानां संकरे समु

मा. पस्थिते ॥ २८ ॥ शतं सहस्रमभ्यर्च्य गाय क.
५० त्रीपावनं महत् ॥ दशशतमष्टोत्तरशतगा ५
यत्री पावनं महत् ॥ २९ ॥ भक्तिभाजो भवे
द्विप्रः संध्याकर्म समाचरेत ॥ काले काले प्रकर्त्त
व्यं सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥३०॥ प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य
भूर्भुवः स्वस्तथैव च ॥ तूर्यं सहैव गायत्रीजप एव
मुदाहृतम् ॥ ३१ ॥ तुरीयपादमुत्सृज्य गायत्रीं
च जपेद्द्विजः ॥ स मूढो नरकं याति कालसूत्रम
धोगतिः ॥ ३२ ॥ मंत्रादौ जननं प्रोक्तं मंत्रान्ते ५०
मृतसूत्रकम् ॥ उभयोर्दोषनिर्मुक्तं गायत्री सफ

ला भवेत् ॥३३॥ मंत्रादौ पाशबीजं च मंत्रांते कु
शबीजकम् ॥ मंत्रमध्ये तु या माया गायत्री सफ
ला भवेत् ॥ ३४ ॥ वाचिकस्त्वहमेव स्यादुपांशु
शतमुच्यते ॥ सहस्रं मानसं प्रोक्तं त्रिविधं जप
लक्षणम् ॥३५॥ अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न
दर्शयेत्॥जपं चाक्षस्वरूपेणानामिकामध्यपर्वणि
॥ ३६ ॥ अनामा मध्यया हीना कनिष्ठादिक्रमेण
तु ॥ तर्जनीमूलपर्यंतं गायत्रीजपलक्षणम्॥३७॥
पर्वभिस्तु जपेदेवमन्यत्र नियमः स्मृतः ॥ गाय
त्रीवेदमूलत्वाद्वेदः पर्वसु गीयते ॥ ३८ ॥ दशभि

र्जन्मजनितं शतेनैव पुरा कृतम् ॥ त्रियुगं तु
सहस्राणि गायत्री हंति किल्बिषम् ॥ ३९ ॥
प्रातःकालेषु कर्तव्यं सिद्धिं विप्रो य इच्छ
ति ॥ नादालये समाधिश्च संध्यायां समु
पासते ॥ ४० ॥ अंगुल्यग्रेण यज्जप्तं यज्जप्तं
मेरुलंघने ॥ असंख्यया च यज्जप्तं तज्जप्तं
निष्फलं भवेत् ॥ ४१ ॥ विना वस्त्रं प्रकुर्वीत
गायत्री निष्फला भवेत् ॥ वस्त्रपुच्छं न जानाति
वृथा तस्य परिश्रमः ॥ ४२ ॥ गायत्रीं तु परि ५१
त्यज्य अन्यमंत्रमुपासते ॥ सिद्धान्नं च परित्यज्य

भिक्षामटति दुर्मतिः ॥ ४३ ॥ ऋषिश्छंदो देव
ताख्या बीजं शक्तिश्च कीलकम् ॥ नियोगं न च
जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ ४४ ॥ वर्णमु
द्राध्यानपदमावाहनविसर्जनम् ॥ दीपं चक्रं न
जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ ४५ ॥ शक्ति
न्यासस्तथा स्थानं मंत्रसंबोधनं परम् ॥ त्रिविधं यो
न जानाति गायत्री निष्फला भवेत् ॥ ४६ ॥ पंचो
पचारकांश्चैव होमद्रव्यं तथैव च ॥ पंचांगं च विना
नित्यं गायत्री निष्फला भवेत् ॥ ४७ ॥ मंत्रसि
द्धिर्भवेज्जातु विश्वामित्रेण भाषितम् ॥ व्यासो

वाचस्पतिर्जीवस्तुता देवी तपःस्मृतौ ॥ ४८ ॥
सहस्रजप्ता सा देवी ह्युपपातकनाशिनी ॥ लक्ष
जाप्ये तथा तच्च महापातकनाशिनी ॥ कोटिजा
प्येन राजेन्द्र यदिच्छति तदाप्नुयात् ॥ ४९ ॥ न देयं
परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः ॥ शिष्येभ्यो भ
क्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात् ॥ ५० ॥ इति
श्रीमद्वसिष्ठसंहितायां गायत्रीकवचं सम्पूर्णम् ॥

## ॥ अथ गायत्रीपंजरस्तोत्रम् ॥

भगवंतं देवदेवं ब्रह्माणं परमेष्ठिनम् ॥ विधातारं
विश्वसृजं पद्मयोनिं प्रजापतिम् ॥ १ ॥ शुद्धस्फ

टिकसंकाशं महेन्द्रशिखरोपमम् ॥ बद्धपिंगजटा
जूटं तडित्कनककुंडलम् ॥ २ ॥ शरच्चंद्राभवद
नं स्फुरदिन्दीवरेक्षणम् ॥ हिरण्मयं विश्वरूपमु
पवीताजिनावृतम् ॥ ३ ॥ मौक्तिकाभाक्षवलय
स्तंत्रीलयसमन्वितः ॥ कर्पूरोद्धूलिततनुः स्रष्टु
र्नयनवर्द्धनम् ॥ ४ ॥ विनयेनोपसंगम्य शिरसा
प्रणिपत्य च ॥ नारदः परिपप्रच्छ देवर्षिगणम
ध्यगः ॥ ५ ॥ नारद उवाच ॥ भगवन्देवदेवेश
सर्वज्ञ करुणानिधे ॥ श्रोतुमिच्छामि प्रश्नेन भो
गमोक्षैकसाधनम् ॥ ६ ॥ ऐश्वर्यस्य समग्रस्य फलदं

द्वंद्ववर्जितम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नं पापाद्यरिभया
पहम् ॥ ७ ॥ यदेकं निष्कलं सूक्ष्मं निरंजनम
नामयम् ॥ यत्ते प्रियतमं लोके तन्मे ब्रूहि पि
तर्मम ॥ ८ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ शृणु नारद व
क्ष्यामि ब्रह्ममूलं सनातनम् ॥ सृष्ट्यादौ
मन्मुखे क्षिप्तं देवदेवेन विष्णुना ॥ ९ ॥
प्रपंचबीजमित्याहुरुत्पत्तिस्थितिहेतुकम् ॥ पुरा
मया तु कथितं कश्यपाय सुधीमते ॥ १० ॥
सावित्रीपंजरं नाम रहस्यं निगमत्रये ॥ ५३
ऋष्यादिकं च दिग्वर्णं सांगावरणकं क्रमात ११॥

वाहनायुधमंत्रास्त्रं मूर्तिध्यानसमन्वितम् ॥
स्तोत्रं शृणु प्रवक्ष्यामि तव स्नेहाच्च नारद ॥
॥ १२ ॥ ब्रह्मनिष्ठाय देयं स्याददेयं यस्य
कस्यचित् ॥ आचम्य नियतः पश्चादात्मध्यान
पुरःसरम् ॥१३॥ ओमित्यादा विचिंत्याथ व्योम
हेमाब्जसंस्थितम् ॥ धर्मकंदगतज्ञानमैश्वर्याष्टद
लान्वितम् ॥१४॥ वैराग्यकर्णिकासीनां प्रणव
ग्रहमध्यगाम् ॥ ब्रह्मवेदिसमायुक्तां चैतन्यपुर
मध्यगाम् ॥ १५ ॥ तत्त्वहंससमाकीर्णां शब्द
पीठेसमंस्थिताम ॥ नादबिंदुकलातीतां गोपुरैरुप

शोभिताम् ॥ १६ ॥ विद्याविद्यामृतत्वादिप्रकारै
रभिसंवृताम् ॥ निगमार्गलसंछन्नां निर्गुणद्वारवा
टिकाम् ॥ १७ ॥ चतुर्वर्गफलोपेतां महाकल्प
वनैर्वृताम् ॥ सांद्रानंदसुधासिंधुनिगमद्वारवा
टिकाम् ॥ १८ ॥ ध्यानधारणयोगा
दितृणगुल्मलतावृताम् ॥ सदसच्चित्स्वरू
पाख्यमृगपक्षिसमाकुलाम् ॥ विद्याविद्यावि
चारत्वाल्लोकालोकाचलावृताम् ॥ १९ ॥ अवि
कारसमाश्लिष्टनिजध्यानगुणावृताम् ॥ पंची ५४
करणपंचोत्थभूततत्त्वनिवेदिताम् ॥ २० ॥ वेदो

पनिषदर्थाख्यदेवर्षिगणसेविताम् ॥ इतिहासग्रह
गणैः सदारैरभिवंदिताम् ॥ २१ ॥ गाथाप्सरो
भिर्यक्षैश्च गणकिंनरसेविताम् ॥ नारसिंहपुराणा
ख्यैः पुरुषैः कल्पचारणैः ॥ २२ ॥ कृतगानवि
नोदादिकथालापनतत्पराम् ॥ तदित्यवाङ्मनोग
म्यतेजोरूपधरां पराम् ॥ २३ ॥ जगतः प्रसवि
त्रीं तां सवितुः सृष्टिकारिणीम् ॥ वरेण्यमित्यन्न
मयीं पुरुषार्थफलप्रदाम् ॥ २४ ॥ अविद्यावर्णव
र्ज्यां च तेजोवद्गर्भसंज्ञिकाम् ॥ देवस्य सच्चिदानंद
परब्रह्मरसात्मिकाम् ॥ २५ ॥ धीमह्यहंसवैतद्ब्र

ह्माद्वैतस्वरूपिणीम्॥धियो यो नस्तु सविता प्रचो
दयादुपासिताम्॥ २६ ॥ परोक्षौ सविता साक्षा
देनोनिर्हरणाय च ॥ परो रजस इत्यादि परं ब्रह्म
सनातनम्॥ २७॥ आपो ज्योतिरितिद्वाभ्यां पां
चभौतिकसंज्ञकम् ॥रसोऽमृतंब्रह्मपदैस्तां नित्यां
तपिनीं पराम्॥ २८ ॥ भूर्भुवःसुवरित्येतैर्निग
मत्वप्रकाशिकाम्॥ महर्जनस्तपःसत्यलोकोप
रि सुसंस्थिताम्॥ २९॥ तादृगस्याविराड्रूपाकि
रीटवरराजिताम्॥ व्योमकेशालकाकाशर
हस्यं प्रवदाम्यहम्॥ ३०॥ मेघभ्रुकुटिकाक्रांत

विधिविष्णुशिवार्चिताम् ॥ गुरुभार्गवकर्णांतां सो
मसूर्याग्निलोचनाम् ॥ ३१ ॥ इलापिंगलसूक्ष्मा
भ्यां वायुनासापुटान्विताम् ॥ संध्याद्विरोष्ठपुटि
तां लसद्वाग्भूपजिह्विकाम् ॥ ३२॥ संध्यासौ द्युम
णे कंठलसद्बाहुसमन्विताम् ॥ पर्ज्जन्यहृदयासक्त
वसुसुस्तनमंडलाम् ॥ ३३ ॥ आकाशोदरवित्रस्त
नाभ्यवांतरदेशकाम् ॥ प्राजापत्याख्यजघनां
कटींद्राणीतिसंज्ञिकाम् ॥ ३४ ॥ ऊरूमलयमेरु
भ्यां शोभमानाऽसुरद्विषम् ॥ जानुनी जह्नुकुशिक
वैश्वदेवसदाभुजाम् ॥ ३५ ॥ अयनद्वयजंघाद्य

खुराद्यपितृसंज्ञिकाम् ॥ पदांघ्रिनखरोमाद्यभूतल
द्रुमलांछिताम् ॥ ३६ ॥ ग्रहराश्यृक्षदेवार्षिमूर्तिं च
परसंज्ञिकाम् ॥ तिथिमासर्तुवर्षाख्यसुकेतुनिमि
षात्मिकाम् ॥ ३७ ॥ अहोरात्रार्द्धमासाख्यां सू
र्याचंद्रमसात्मिकाम्॥मायाकल्पितवैचित्र्यसंध्या
च्छादनसंवृताम् ॥ ३८ ॥ ज्वलत्कालानलप्र
ख्यां तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥ कोटिसूर्यप्रती
काशां चंद्रकोटिसुशीतलाम् ॥ ३९ ॥ सुधामंड
लमध्यस्थां सांद्रानंदाऽमृतात्मिकाम् ॥ प्रागतीतां ५६
मनोरम्यां वरदां वेदमातरम् ॥ ४० ॥ चराचरम

यीं नित्यां ब्रह्माक्षरसमन्विताम् ॥ ध्यात्वा स्वा
त्मनि भेदेन ब्रह्मपंजरमारभेत् ॥ ४१ ॥ पंजरस्य
ऋषिश्चाहं छंदो विकृतिरुच्यते ॥ देवता च परो
हंसः परब्रह्माधिदेवता ॥ ४२ ॥ प्रणवो बीजशक्तिः
स्यादों कीलकमुदाहृतम् ॥ तत्तत्त्वं धीमहि क्षेत्रं
धियोऽस्त्रं यः परं पदम् ॥४३॥ मंत्रमापो ज्योति
रिति योनिर्हंसः सबंधकम् ॥ विनियोगस्तु सिद्ध्य
र्थं पुरुषार्थचतुष्टये ॥ ४४ ॥ ततस्तैरंगषट्कं स्यात्तै
रेव व्यापकत्रयम् ॥ पूर्वोक्तदेवतां ध्यायेत्साकार
गुणसंयुताम् ॥ ४५ ॥ पंचवक्त्रां दशभुजां त्रिपंच

नयनैर्युताम् ॥ मुक्ताविद्रुमसौवर्णां सितशुभ्र
समाननाम् ॥ ४६ ॥ वाणीं परां रमां मायां चा
मरैर्दर्पणैर्युताम्॥षडंगदेवतामंत्रै रूपाद्यवयवात्मि
काम् ॥ ४७ ॥ मृगेंद्रवृषपक्षींद्रमृगहंसासने स्थि
ताम् ॥ अर्द्धेन्दुबद्धमुकुटाकिरीटमणिकुंडलाम् ॥
॥ ४८ ॥ रत्नताटंकमांगल्यपरग्रैवेयनूपुराम् ॥
अंगुलीयककेयूरकंकणाद्यैरलंकृताम् ॥ ४९ ॥
दिव्यस्रग्वस्त्रसंछन्नरविमण्डलमध्यगाम्॥ वराभ
याब्जयुगलां शंखचक्रगदांकुशान् ॥ ५० ॥ शुभ्रं
कपालं दधतीं वहंतीमक्षमालिकाम् ॥ गायत्रीं

वरदां देवीं सावित्रीं वेदमातरम् ॥ ५१ ॥ आदित्य
पथगामिन्यां स्मरेद्ब्रह्मस्वरूपिणीम् ॥ विचित्रमंत्र
जननीं स्मरेद्विद्यां सरस्वतीम् ॥ ५२ ॥ त्रिपदा ऋ
ङ्मयी पूर्वामुखी ब्रह्मास्त्रसंज्ञिका ॥ चतुर्विंशतित
त्त्वाख्या पातु प्राचीं दिशं मम ॥ ५३ ॥ चतुष्पा
दयजुर्ब्रह्मदंडाख्या पातु दक्षिणाम् ॥ षट्त्रिंशत्त
त्त्वयुक्ता सा पातु मे दक्षिणां दिशम् ॥ ५४ ॥
प्रत्यङ्मुखी पंचपदी पंचाशत्तत्त्वरूपिणी ॥
पातु प्रतीचीमनिशं सामब्रह्मशिरोऽङ्किता ॥
॥ ५५ ॥ सौम्या ब्रह्मस्वरूपाख्या साथर्वांगि

गा. रसात्मिका ॥ उदीचीं षट्पदा पातु चतुष्षष्टि पं.
५८ कलात्मिका ॥५६॥ पंचाशत्तत्त्वरचिता [1]भवपादा ६
शताक्षरी ॥ व्योमाख्या पातु मे चोर्ध्वां दिशं
वेदांगसंस्थिता ॥ ५७॥ विद्युन्निभा ब्रह्मसंज्ञामृगा
रूढा चतुर्भुजा ॥ चापेषुचर्मासिधरा पातु मे
पावकीं दिशम्॥५८॥ब्राह्मी कुमारी गायत्री रक्ता
ङ्गी हंसवाहिनी ॥ बिभ्रत्कमण्डल्वक्षस्रक्स्रुवान्मे
पातु नैर्ऋतीम ॥ ५९ ॥ चतुर्भुजा वेदमाता
शुक्लांगी वृषवाहिनी ॥ वराभयकपालाक्षस्रग्वि ५८

---

१ एकादशपदेत्यर्थः ।

णी पातु वारुणीम् ॥ ६० ॥ श्यामा सरस्वती
वृद्धा वैष्णवी गरुडासना ॥ शंखाराब्जाभय
करा पातु शैवीं दिशं मम ॥ ६१ चातुर्भुजा
वेदमाता गौरांगी सिंहवाहना ॥ वराभयाब्जयु
गुलैर्भुजैः पात्वधरां दिशम् ॥ ६२ ॥ तत्तत्पार्श्व
स्थिताः स्वस्ववाहनायुधभूषणाः ॥ स्वस्वदिक्षु
स्थिताः पांतु ग्रहशक्त्यंगदेवताः ॥ मंत्राधिदे
वतारूपा मुद्राधिष्ठानदेवताः ॥६३॥ व्यापकत्वेन
पात्वस्मानापहृत्तलमस्तकी ॥ ६४ ॥ तत्पदं मे
शिरः पातु भालंमे सवितुः पदम्॥वरेण्यं मे दृशौ

पातु श्रुती भर्गः सदा मम ॥ ६५ ॥ घ्राणं
देवस्य मे पातु पातु धीमहि मे मुखम् ॥ जिह्वां
मम धियः पांतु कंठं मे पातु यः पदम् ॥ ६६॥
नः पदं पातु मे स्कंधौ भुजौ पातु प्रचोदयात्॥
करौ मे च परः पातु पादौ मे रजसेऽवतु ॥ ६७ ॥
असौ मे हृदयं पातु मम मध्यमदावतु ॥ ओं मे
नाभिं सदा पातु कटिं मे पातु मे सदा॥ओमापः
सक्थिनी पातु गुह्यं ज्योतिः सदा मम॥६८॥ऊरू
मम रसः पातु जानुनी अमृतं मम॥जंघे ब्रह्मपदं
पातु गुल्फौ भूः पातु मे सदा ॥ ६९ ॥ पादौ मम

भुवः पातु सुवः पात्वखिलं वपुः ॥ रोमाणि मे
महः पातु रोमकं पातु मे जनः ॥ ७० प्राणांश्च
धातुतत्त्वानि तदीशः पातु मे तपः ॥ सत्यं पातु
ममायूंषि हंसो बुद्धिं च पातु मे ॥ ७१ ॥ शुचिष
त्पातु मे शुक्रं वसुः पातु श्रियं मम ॥ मतिं पात्वं
तरिक्षसद्धोता दानं च पातु मे ॥ ७२ ॥ वेदिषत्पा
तु मे विद्यामतिथिः पातु मे गृहम् ॥ धर्मं दुरोण
सत्पातु नृषत्पातु सुतान्मम ॥ ७३ ॥ वरसत्पा
तु मे भार्यामृतसत्पातु मे सुतान् ॥ व्योमसत्पा
तु मे बंधून्भ्रातॄनब्जाश्च पातु मे ॥ ७४ ॥

गा. पशून्मे पातु गोजाश्च ऋतजाः पातु मे भवम् ॥ पं.
६० सर्वं मे अद्रिजाः पातु यानं मे पात्वृतं सदा ॥ ६
॥ ७५ ॥ अनुक्तमथ यत्स्थानं शरीरेंतर्बहिश्च
यत् ॥ तत्सर्वं पातु मे नित्यं हंसः सोहमहर्न्नि
शम्॥७६॥ इदं तु कथितं सम्यङ्मया ते ब्रह्मपंजर
म् ॥ संध्ययोः प्रत्यहं भक्त्याजपकाले विशेषतः
॥७७॥ धारयेद्द्विजवर्यो यः श्रावयेद्वा समाहितः ॥
स विष्णुः स शिवः सोहं सोऽक्षरः स विराट् स्व
राट् ॥ ७८ ॥ शताक्षरात्मकं देव्या नामाष्टावि ६०
शतिः शतम्॥शृणु वक्ष्यामितत्सर्वमतिगुह्यंसनात

नम॥७९॥भूतिदा भुवनावाणीवसुधासुमनामही॥
हरिणी जननी नंदा सविसर्गा तपस्विनी ॥८०॥
पयस्विनी सती त्यागा चैंदवी सत्यवीरसा ॥
विश्वा तुर्य्या परा रेच्या निर्घृणी यामिनी भवा
॥ ८१ ॥ गोवेद्या च जरिष्ठा च स्कंदिनी धीर्मति
र्हिमा ॥ भीषणा योगिनी षक्षी नदी प्रज्ञा च
चोदिनी ॥ ८२ ॥ धनिनी यामिनी पद्मा
रोहिणी रमणी ऋषिः ॥ सेनामुखी सामयी च
बकुला दोषवर्जिता ॥ ८३ ॥ सर्वकामदुघा सो
मोद्भवाहंकारवर्जिता ॥ द्विपदा च चतुष्पादा त्रि

गा. पदा चैव षट्पदा ॥ ८४ ॥ अष्टापदी नवपदी पं
६१ सा सहस्राक्षरात्मिका ॥ इदं यः परमं गुह्यं सावि ६
त्रीमंत्रपंजरम् ॥ ८५ ॥ नामाष्टविंशतिशतं शृणु
याच्छ्रावयेत्पठेत् ॥ मर्त्यानाममृतत्वाय भीता
नामभयाय च ॥ ८६ ॥ मोक्षाय च मुमुक्षूणां
श्रीकामानां श्रियै सदा ॥ विजयाय युयुत्सूनां
व्याधितानामरोगकृत् ॥ ८७ ॥ वश्याय वश्य
कामानां विद्यायै वेदकामिनाम् ॥ द्रविणाय
दरिद्राणां पापिनां पापशांतये ॥ ८८ ॥ वादि ६१
नां वादविजये कवीनां कविताप्रदम् ॥ अन्नाय

क्षुधितानां च स्वर्गाय नाकमिच्छताम् ॥ ८९॥
पशुभ्यः पशुकामानां पुत्रेभ्यः पुत्रकांक्षि
णाम् ॥ क्लेशिनां शोकशांत्यर्थं नृणां शत्रुभ
याय च ॥ ९० ॥ राजवश्याय द्रष्टव्यं पंजरं
नृपसेविनाम् ॥ भक्त्यर्थं विष्णुभक्तानां विष्णौ
सर्वांतरात्मनि ॥ ९१ ॥ नायकं विधिमृष्टानां
शांतये भवति ध्रुवम् ॥ निःस्पृहाणां नृणां
मुक्तिः शाश्वती भवति ध्रुवम् ॥ ९२ ॥ जप्यं
त्रिवर्गसंयुक्तं गृहस्थेन विशेषतः ॥ मुनीनां
ज्ञानसिद्ध्यर्थं यतीनां मोक्षसिद्धये ॥ ९३ ॥

गा. उद्यतं चंद्रकिरणमुपस्थाय कृतांजलिः ॥ कान पं.
६२ ने वा स्वभवने तिष्ठञ्छुद्धो जपेदिदम् ॥ ९४ ॥ ६
सर्वान्कामानवाप्नोति तथैव शिवसंनिधौ ॥
मम प्रीतिकरं दिव्यं विष्णुभक्तिविवर्द्धनम् ॥
॥ ९५ ॥ ज्वरार्तानां कुशाग्रेण मार्जयेत्कुष्ठरोगि
णाम॥अंगमंगं यथालिंगं कवचेन तु साधकः ९६॥
मंडलेन विशुद्ध्येत सर्वरोगैर्न संशयः ॥ मृतप्रजा
च या नारी जन्मवंध्या तथैव च ॥ ९७ ॥ कन्या
दिवंध्या या नारी तासामंगं प्रमार्जयेत् ॥ ६१
पुत्रा न रोगिणस्तास्तु लभंते दीर्घजीविनः ॥९८॥

तास्ताः संवत्सरादर्वाग्गर्भं तु दधिरे पुनः ॥ पति
विद्वेषिणी या स्त्री अंगं तस्याः प्रमार्जयेत्॥ ९९॥
तमेव भजते सा स्त्रीपतिं कामवशं नयेत्॥ अश्वत्थे
राजवश्यार्थं विल्वमूले स्वरूपभाक् ॥ १०० ॥
पालाशमूले विद्यार्थी तेजसाभिमुखो रवौ ॥ क
न्यार्थी चंडिकागेहे जपेच्छत्रुभयाय च ॥ १०१॥
श्रीकामो विष्णुगेहे च उद्याने श्रीवशी भवेत् ॥
आरोग्यार्थे स्वगेहे च मोक्षार्थी शैलमस्तके
॥ १०२ ॥ सर्वकामो विष्णुगेहे मोक्षार्थी यत्र कु
त्रचित् ॥ जपारंभे तु हृदयं जपांते कवचं पठेत्

॥ १०३ ॥ किमत्र बहुनोक्तेन शृणु नारद
तत्त्वतः ॥ यं यं चिंतयते नित्यं तं तं प्राप्नोति
निश्चितम् ॥ १०४ इति श्रीमद्वासिष्ठसंहितायां
ब्रह्मनारदसंवादे श्रीमद्गायत्रीपंजरस्तोत्रं समा
प्तम् ॥ ६ ॥

## अथ गायत्रीस्तवराजः ॥

ॐ अस्य श्रीगायत्रीस्तवराजस्तोत्रमंत्रस्य वि
श्वामित्र ऋषिः सकलजननी चतुष्पदा गायत्री
परमात्मा देवता सर्वोत्कृष्टपरं धाम प्रथमपादो
बीजं द्वितीयः शक्तिः तृतीयः कीलकं दशप्रणव

संयुक्ता सव्याहृतिका तूर्यपादसहिता व्यापकं
मम धर्मार्थकाममोक्षार्थे जपे विनियोगः ॥
न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ तद्यथा ॥ गायत्रीं वे
दधात्रीं शतमखफलदां वेदशास्त्रैकवेद्यां चिच्छ
क्तिं ब्रह्मविद्यां परमशिवपदां श्रीपदं वै करोति ॥
सर्वोत्कृष्टं पदं तत्सवितुरनुपदांते वरेण्यं
शरण्यं भर्गो देवस्य धीमह्यभिदधाति धियो
यो नः प्रचोदयादित्यौर्वतेजः ॥ १ ॥ साम्रा
ज्यबीजं प्रणवत्रिपादं सव्या पसव्यं प्रजपेत्सह
स्त्रकम् ॥ संपूर्णकामं प्रणवं विभूतिं तथा भवेद्वाक्य

विचित्रवाणी ॥ २ ॥ शुभं शिवं शोभनमस्तु मह्यं
सौभाग्यभोगोत्सवमस्तु नित्यम् ॥ प्रकाशविद्या
त्रयशास्त्रसर्वं भजेन्महामन्त्रफलं प्रिये वै ॥ ३ ॥
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मदंडं शिरसि शिखिमहद्ब्रह्मशीर्षं
नमोंतं सूक्तं पारायणोक्तं प्रणवमथ महावाक्य
सिद्धांतमूलम् ॥ तुर्य्यं त्रीणिद्वितीयं प्रथममनुमहा
वेदवेदांतसूक्तं नित्यं स्मृत्यानुसारं नियमितचारि
तंमूलमंत्रं नमोंतम् ॥ ४ ॥ अस्त्रं शास्त्रहतं त्वघोरस्त्राहि
तं दंडेन वाजीहतं चादित्यादिहतं शिरोंतसाहि
तं पापक्षयार्थं परम ॥ तुर्य्यांत्यादिविलोममंत्र

पठनं बीजं शिखांतोर्ध्वकं नित्यं कालनियम्य
विप्रविदुषां किं दुष्कृतं भूसुरान् ॥५॥ नित्यं मुक्ति
प्रदं नियम्य पवनं निर्घोषशक्तित्रयं सम्यग्ज्ञा
नगुरूपदेशविधिवद्देवीं शिखां तामपि ॥ षष्ट्यै
कोत्तरसंख्ययानुगतसौषुम्नादिमार्गत्रयीं ध्याये
न्नित्यसमस्तवेदजननीं देवीं त्रिसंध्यामयीम् ॥६॥
गायत्रीं सकलागमार्थविदुषां सौरस्यबीजेश्वरीं स
र्वाम्नायसमस्तमंत्रजननीं सर्वज्ञधामेश्वरीम् ॥ ब्र
ह्मादित्रयसंपुटार्थकरणीं संसारपारायणीं संध्यां
सर्वसमानतंत्रपरया ब्रह्मानुसंधायिनीम् ॥ ७ ॥

एकद्वित्रिचतुःसमानगणनावर्णाष्टकं पादयोः
पादादौ प्रणवादिमंत्रपठने मंत्रत्रयीसंपुटाम् ॥
संध्यायां द्विपदं पठेत्परतरं सायं तुरीयं
युतं नित्यानित्यमनंतकोटिफलदं प्राप्तं नम
स्कुर्महे ॥ ८ ॥ ओजोसीति सहोस्यहो
बलमसि भ्राजोसि तेजस्विनी वर्चस्वी सवि
ताग्निसोमममृतं रूपं परं धीमहि ॥ देवानां
द्विजवर्यतां मुनिगणे मुक्त्यर्थिनां शांतिनामो
मित्येकमृचं पठंति यमिनो यं यं स्मरेत्प्राप्नुया
त् ॥ ९ ॥ ओमित्येकमजस्वरूपममलं तत्सम

धा भाजितं तारं तंत्रसमन्वितं परतरे पादत्रयं
गर्भितम् ॥ आपोज्योतिरसोमृतं जनमहः
सत्यं तपः स्वर्भुवर्भूयोभूय नमामि भूर्भुवः स्वरो
मैतैर्महामंत्रकम् ॥ १० ॥ आदौ बिंदुमनुस्मरन्प
रतरे बालात्रिवर्णोच्चरन्व्याहृत्यादिसबिंदुयुक्तत्रि
पदातारत्रयं तुर्यकम्॥आरोहादवरोहतःक्रमगता
श्रीकुंडलीत्थं स्थिता देवी मानसपंकजे त्रिनयना
पंचानना पातु माम् ॥११॥ सर्वे सर्ववशे समस्तस
मये सत्यात्मिके सात्त्विके सावित्री सवितात्मके
शशियुते सांख्यायनीगोत्रजे ॥ संध्यात्रीण्युपक

ल्प्य संग्रहविधिः संध्याभिधानात्मके गायत्री स्त.
६६ प्रणवादिमंत्रगुरुणा संप्राप्य तस्मै नमः॥१२॥क्षेमं ७
दिव्यमनोरथाः परतरे चेतः समाधीयतां ज्ञानं
नित्यवरेण्यमेतदमलं देवस्य भर्गो धियम्॥मोक्ष
श्रीर्विजयार्थिनोऽथ सवितुः श्रेष्ठं विधिस्तत्पदं
प्रज्ञा मेधप्रचोदयात्प्रतिदिनं यो नः पदं पातु
माम् ॥ १३ ॥ सत्यं तत्सवितुर्वरेण्यविरलं विश्वा
दिमायात्मकं सर्वाद्यं प्रतिपादपादरमया तारं त
था मन्मथम्॥ तुर्यान्यत्त्रितयं द्वितीयमपरं संयोग ६६
सव्याहृतिं सर्वाम्नायमनोन्मयीं मनसिजां ध्या

यामि देवीं पराम् ॥ १४ ॥ आदौ गायत्रिमंत्रं गु
रुकृतनियमं धर्मकर्मानुकूलं सर्वाद्यं सारभूतं स
कलमनुमयं देवतानामगम्यम् ॥ देवानां पूर्वदेवं
द्विजकुलमुनिभिः सिद्धविद्याधराद्यैः को वा वक्तुं
समर्थस्तवमनुमहिमाबीजराजादिमूलम् ॥ १५ ॥
गायत्रीं त्रिपदां त्रिबीजसहितां त्रिव्याहृतिं त्रै
पदां त्रिब्रह्मात्रिगुणां त्रिकालनियमां वेदत्रयीं तां
पराम् ॥ सांख्यादित्रयरूपिणीं त्रिनयनां मा
तृत्रयीं तत्परां त्रैलोक्यत्रिदशत्रिकोटिसहि
तां संध्यां त्रयीं तां नुमः ॥ १६ ॥ ओमित्येतत्त्रि

मात्रात्रिभुवनकरणं त्रिस्वरं वह्निरूपं त्रीणित्रीणि
त्रिपादं त्रिगुणगुणमयं त्रैपुरांतं त्रिसूक्तम् ॥ तत्त्वा
नां पूर्वशक्तिं द्वितयगुरुपदं पीठयंत्रात्मकं तं त
स्मादेतत् त्रिपादं त्रिपदमनुसरं त्राहि मां भो नम
स्ते ॥ १७ ॥ स्वस्तिश्रद्धातिमेधा मधुमतिमधुरः
संशयः प्रज्ञकांतिर्विद्या बुद्धिर्बलं श्रीरतनुधन
पतिः सौम्यवाक्यानुवृत्तिः ॥ मेधा प्रज्ञा प्रतिष्ठा
मृदुपतिमधुरा पूर्णविद्याप्रपूर्णं प्राप्तं प्रत्यूषचिंत्यं
प्रणवपरवशात्प्राणिनां नित्यकर्म ॥ १८ ॥ पंचाश
द्वर्णमध्ये प्रणवपरयुते मंत्रमाद्यं नमोंतं सर्वं स

व्यापसव्यं शतगुणमभितो वर्ममष्टोत्तरं ते ॥
एवं नित्यं प्रजप्तं त्रिभुवनसहितं तूर्य्यमंत्रं त्रिपा
दं ज्ञानं विज्ञानगम्यं गगनसुसदृशं ध्यायते यः
स मुक्तः ॥ १९ ॥ आदिक्षांतसबिंदुयुक्तसहितं मेरुं
क्षकारात्मकं व्यस्ताव्यस्तसमस्तवर्गसहितं पूर्णं
शताष्टोत्तरम् ॥ गायत्रीं जपतां त्रिकालसहितां
नित्यं सनैमित्तिकमेवं जाप्यफलं शिवेन कथितं
सद्धोग्यमोक्षप्रदम् ॥ २० ॥ सप्तव्याहृतिसप्तता
रविकृतिः सत्यं वरेण्यं धृतिः सर्वं तत्सवितुश्च
धीमहि महाभर्गस्य देवं भजे ॥ धाम्नो धाम

धमाधिधारणमहान्धीमत्पदं ध्यायते ॐ तत्सर्वं
मनुप्रपूर्णदशकं पादत्रयं केवलम् ॥२१॥ विज्ञानं
विलसद्विवेकवचसः प्रज्ञानुसंधारिणीं श्रद्धामेध्य
यशःशिरःसुमनसः स्वस्ति श्रियं त्वां सदा ॥
आयुष्यं धनधान्यलक्ष्मिमतुलां देवीं कटाक्षं
परं तत्काले सकलार्थसाधनमदान्मुक्तिर्महत्त्वं
पदम् ॥ २२ ॥ पृथ्वीगंधोर्च्चनायां नभसि कुसुम
ता वायुधूपप्रकर्षो वह्निर्दीपप्रकाशो जलममृत
मयं नित्यसंकल्पपूजा ॥ एतत्सर्वं निवेद्यं सुखव ६८
ति हृदये सर्वदा दंपतीनां त्वं सर्वज्ञा शिवं मे कुरु

तव ममता भक्तवृन्दे प्रसिद्धा ॥ २३ ॥ सौम्यं
सौभाग्यहेतुं सकलसुखकरं सर्वसौख्यं समस्तं
सत्यं सद्योगनित्यं सुखजनसुहृदं सुंदरं श्रीस
मस्तम् ॥ सौमंगल्यं समग्रं सकलशुभकरं स्व
स्तिवाचं समस्तं सर्वाद्यं सद्विवेकं त्रिपदपदयुगं
प्राप्तुमध्यासमस्तम् ॥ २४ ॥ गायत्रीपदपंचपंच
प्रणवद्वंद्वं त्रिधा संपुटं सृष्ट्यादिक्रममंत्रजाप्य
दशकं देवीपदं क्षुत्त्रयम् ॥ मंत्रादिस्थितिकेषु
संपुटमिदं श्रीमातृकावेष्टनं वर्णांत्यादिविलोम
मंत्रजपनं संहारसंमोहनम् ॥ २५ ॥ भूराद्यं

भूर्भुवस्वस्त्रिपदपदयुतं त्र्यक्षमाद्यंतयोऽज्यं सृष्टि
स्थित्यंतकार्य्यं क्रमशिखिसकलं सर्वमंत्रं प्रशस्त
म् ॥ सर्वांगं मातृकाणां मनुमयवपुषं मंत्रयोगं प्र
युक्तं संहारं क्षादिवर्णं वसुशतगणनं मंत्रराजं नमा
मि ॥ २६ ॥ विश्वामित्रमुदाहृतं हितकरं सर्वार्थ
सिद्धिप्रदं स्तोत्राणां परमं प्रभातसमये पारायणं
नित्यशः ॥ वेदानां विधिवादमंत्रसफलं सिद्धिप्रदं
संपदां स प्राप्नोत्यपरत्रसर्वसुखदमायुष्यमारोग्य
तां ॥ २७ ॥ इति श्रीविश्वामित्रकृतो गायत्रीस्त
वराजः समाप्तः ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ सहस्रनाम ॥

ॐ कैलासे सुखमासीनं तुषारकरशेखरम् ॥ बद्धां
जलिर्नमस्कृत्याभ्यर्च्य पृच्छति पार्वती ॥१॥ पा
र्वत्युवाच ॥ किं विन्यस्तं त्वया देव स्वशरीरे नि
रंतरम् ॥ कथमेतादृशी कांतिः कथं तेऽष्टौ समृ
द्धयः ॥ २ ॥ सर्वतत्त्वप्रभुत्वं च कथं कथमथा
श्रयेत् ॥ कृपया ब्रूहि देवेश प्रसन्नोऽसि यदि
प्रभो ॥ ३ ॥ भगवन्विविधा विद्याः श्रोतु-
मिच्छामि ते प्रभो ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि
गायत्र्याश्च महोत्सवम् ॥ ४ ॥ नाम्नां सहस्रं

देवेश कृपया वक्तुमर्हसि ॥ यद्यहं प्रेयसी भा
र्या यद्यहं प्राणवल्लभा ॥ ५ ॥ इति श्रुत्वा वचो
देव्याः प्रसन्नः प्रभुरीश्वरः ॥ श्रूयतामिति चाभा
ष्य जगाद जगदंबिकाम् ॥ ६ ॥ शृणु देवि रहस्यं
मे कस्याप्यग्रे न चोदितम् ॥ गोपितं सर्वतंत्रेषु
सिद्धानां स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ७ ॥ सर्वसौभाग्यजन
कं सर्वसंपत्तिदायकम् ॥ सर्ववश्यकरं लोके सर्व
प्रत्यूहनाशनम् ॥ ८ ॥ सर्ववादिमुखस्तंभि निग्र
हानुग्रहक्षमम् ॥ त्वत्प्रीत्या कथयिष्यामि सुगो
प्यमपि दुर्लभम् ॥ ९ ॥ सर्वपापक्षयकरं सर्वज्ञान

मयं शिवम् ॥ परायणानां परमा परब्रह्मस्वरूपि
णी ॥ १० ॥ परा च परमेशानी परब्रह्मात्मिका
मता ॥ सा देवी च वरारोहा चेतसा चिंतयाम्य
हम् ॥ ११ ॥ ऐश्वर्यं च दशप्राप्तिर्वरदादित्वमेव
च ॥ गायत्र्या दिव्यसाहस्रं स्वप्ने चाप्तं मयापि
यत् ॥ १२ ॥ ऋषिरस्य समाख्यातो महादेवो
महेश्वरः ॥ देवता देवजननी छंदः सामादि की
र्तितम् ॥ १३ ॥ धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोग
उदाहृतः ॥ सर्वभूतांतरीं ध्यात्वा पद्मासनग
तां शुचिः ॥ १४ ॥ ततः सहस्रनामेदं पठितव्यं

मुमुक्षुभिः ॥ सर्वकार्यकरं पुण्यं महापातक
नाशकम् ॥ १५ ॥ ॐ तत्काररूपा तद्रूपा त
त्पदार्थस्वरूपिणी ॥ तपस्वाध्यायनिरता तपस्वी
वाग्विदांवरा ॥ १ ॥ तत्कीर्तिगुणसंपन्ना तथ्यवा
दी तपोनिधिः ॥ तत्पदेशानुसंबंधा तपोलोकनि
वासिनी ॥ २ ॥ तरुणादित्यसंकाशा तप्तकांचन
भूषणा ॥ तमोपहारिणी तंत्री तन्निपातनिवारि
णी ॥ ३ ॥ तलादिभुवनांतःस्था तारिणी तार
रूपिणी ॥ तर्करूपितकोषादितर्कशास्त्रविदारि
णी ॥ ४ ॥ तर्कवादिमुखास्तंभा राज्ञां च पारि

पालिनी ॥ तंत्रसारा तंत्रमाता तंत्रमार्गप्रदर्शि
नी ॥ ५ ॥ तंत्री तंत्रविधानज्ञा तंत्रस्था तंत्रसा
क्षिणी ॥ तदेकध्याननिरता तत्त्वज्ञानप्रबोधिनी
॥ ६ ॥ तन्नाममंत्रसुप्रीता तपस्विजनसेविता॥ ॐ
काररूपा सावित्री सर्वरूपा सनातनी ॥ ७ ॥ सं
सारदुःखशमनी सर्वयागफलप्रदा ॥ ८ ॥ सफ
ला सत्यसंकल्पा सत्या सत्यप्रदायिनी ॥ संतो
षजननी सारा सत्यलोकनिवासिनी ॥ ९ ॥ समु
द्रतनयाराध्या सामगानप्रिया सती ॥ समाना
सामिधेनी च समस्तसुरसेविता ॥ १० ॥ सर्वसं

पत्तिजननी संपदा सिंधुसेविता ॥ सर्वोत्तुंगा तुंग
हीना सद्गुणा सकलेष्टदा ॥ ११ ॥ सनकादिमुनि
ध्येया समानाधिकवर्जिता ॥ साध्या सिद्धा सुधा
वासा सिद्धिः साध्यप्रदायिनी ॥ १२ ॥ सम्यगा
राध्यनिलया समुत्तीर्णा सदाशिवा ॥ सर्ववेदांत
निलयासर्वशास्त्रार्थवादिनी ॥१३॥ सहस्रदलपद्म
स्था सर्वज्ञा सर्वतोमुखी ॥ समया समयाचारा
सत्या षड्ग्रंथिभेदिनी ॥ १४ ॥ सप्तकोटिमहा
मंत्रमाता सर्वप्रदायिनी ॥ सगुणा संभ्रमा साक्षी ७२
सर्वचैतन्यरूपिणी ॥ १५ ॥ सत्कीर्तिः सात्त्विकी

साध्वी सच्चिदानंदरूपिणी ॥ संकल्परूपिणी
संध्याशालग्रामनिवासिनी ॥ १६ ॥ सर्वोपाधिवि
निर्मुक्ता सत्यज्ञानप्रबोधिनी ॥ विकाररूपा विप्र
श्रीर्विप्राराधनतत्परा ॥ १७ ॥ विप्रिणी विप्र
कल्याणी विप्रवाक्यस्वरूपिणी ॥ विप्रकैवल्यश
यनी विप्री विप्रप्रसादिनी ॥ १८ ॥ विप्रमंदिरम
ध्यस्था विप्रवादविनोदिनी ॥ विप्रोपाधिविनि
र्मुक्ता विप्रहत्याविमोचनी ॥१९॥ विप्रत्राता विप्र
गोत्रा विप्रगोत्रविवर्धिनी ॥ विप्रभोजनसंतुष्टा
विष्णुरूपा विनोदिनी ॥ २० ॥ विष्णुमाया

विष्णुवंद्या विष्णुगर्भा विचित्रिणी ॥ वैष्णवी
विष्णुभगिनी विष्णुमायाविलासिनी ॥ २१ ॥
विकाररहिता वंद्या विज्ञानघनरूपिणी ॥ विश्व
साक्षी विश्वयोनिर्विश्वामित्रप्रसादिनी ॥ २२ ॥
विबुधा विष्णुसंकल्पा विकल्पा विश्वसाक्षिणी ॥
विष्णुचैतन्यनिलया विष्णुस्था विश्ववादिनी ॥
॥ २३ ॥ विवेकी विविधानंदी विजया विश्व
मोहिनी ॥ विद्याधरी विधानज्ञा विबुधार्थस्वरू
पिणी ॥२४॥ विरूपाक्षी विराड्रूपा विक्रमा वि
श्वमंगला ॥ विश्वंभरा समाराध्या विश्वभ्रम

णकारिणी ॥२५॥ विनायकी विनोदस्था वीरगो
ष्ठीविवर्द्धिनी ॥ विवाहरहिता वंद्या विंध्याचलनि
वासिनी ॥२६॥ विद्या विद्याकरी वेद्या वैद्यविद्या
प्रबोधिनी ॥ विमला विभवा विद्या किंकरस्था
किंकसाक्षिणी ॥ २७ ॥ वीरमध्या वरारोहा
वितंत्रा विश्वनायका ॥ वीरहत्याप्रशमनी विन
म्रजनपावनी ॥ २८ ॥ वीरधा विविधाकारा
विरोधजनवादिनी ॥ तुकारूपा तुतुर्यश्रीस्तुल
सीवनवासिनी ॥ २९ ॥ तुलस्या मातुला तुल्या
तुल्यगोत्रा तुलेश्वरी ॥ तुरंगी तुरगारूढा तुरं

गरथमोदिनी ॥ ३० ॥ तुरंगरदना मोहा तुला
दानफलप्रदा ॥ तुलामाघस्नानतुष्टा तुष्टिपुष्टि
प्रदायिनी ॥३१॥ तुरंगमप्रसंतुष्टा तुलिता तुल्यम
ध्यगा ॥ तुंगोत्तुंगा तुंगकुचा तुहिनाचलसंस्थि
ता ॥ ३२ ॥ तुंबरादिस्तुतिप्रीता तुषारवपुषेश्व
री ॥ तुष्टा च तुष्टजननी तुष्टलोकनिवासिनी ॥
॥ ३३ ॥ तुलाधारा तुलामध्या तुलस्था तुलरूपि
णी ॥ तुरीयगुणगंभीरा तुर्यनामस्वरूपिणी ॥
॥ ३४ ॥ तुर्य्यविद्वल्लास्यसंस्था तुर्य्यशास्त्रार्थवा
दिनी ॥ तुर्य्यशास्त्रार्थतत्त्वज्ञा तुर्य्यवादविनोदि

नी ॥ ३५ ॥ तुर्य्यनादांतनिलया तुर्य्यानंदस्वरू
पिणी ॥ तुरीयभक्तिजननी तुर्य्यमार्गप्रदर्शिनी
॥ ३६ ॥ वकाररूपावागीशी वरेण्या वरसंस्थि
ता ॥ वरा वरिष्ठा वैदेही वेदशास्त्रप्रदर्शिनी ॥३७॥
वैकल्पशमणी वाणी वांछितार्थफलप्रदा ॥ वय
स्था वयमध्यस्था वयोवस्थाविवर्जिता ॥ ३८ ॥
वंदिनी वादिनी वार्य्या वाङ्मयी वीरवंदिनी ॥
वानप्रस्थाश्रमस्थायी वनदुर्गा वनालया ॥ ३९ ॥
वनजाक्षी वनचरी वनिता वनमोदिनी ॥ वसिष्ठा
वामदेवादिवंद्या वंद्यस्वरूपिणी ॥४०॥ वाल्मीकी

वाक्करी वाचा वारुणी वरुणाप्रिया ॥ वैद्या वैद्यचि
कित्सा च वषट्कारी वसुंधरा ॥ ४१ ॥ वसुमाता
वसुत्राता वसुजन्मविमोचनी ॥ वसुप्रदा वासुदेवी
वासुदेवमनोहरी ॥ ४२ ॥ वासवार्चितपादश्रीर्वा
सवारिविनाशिनी ॥ वागीशवाङ्मनःस्थायी वन
वासवशा वशी ॥ ४३ ॥ वामदेवी वरारोहा वाद्य
घोषणतत्परा ॥ वाचस्पतिसमाराध्या वागीशी
वाचकीरवाक् ॥ ४४ ॥ रेकाररूपा रेवा च रेवाती
रनिवासिनी ॥ रेकिणी रेवती रक्षा रुद्रजन्मा रज
स्वला ॥ ४५ ॥ रेणुका रमणी रम्या रतिवृद्धा

रतारती ॥ रावणादित्यदानंदा राजश्री राजशे
खरा ॥ ४६ ॥ रणमध्या रथारूढा रविकोटिसम
प्रभा ॥ रविमंडलमध्यस्था रजनी रविलोचना ॥
॥ ४७ ॥ रथांगपाणी रक्षोघ्नी रागिणी रावणा
र्चिता ॥ रंभादिकन्यकाराध्या राज्यदा राज्यव
र्द्धिनी ॥ ४८ ॥ रजताद्रीश्वरोरुस्था रम्या राजी
वलोचना ॥ रमा वाणी रमाराध्या राज्यदात्री
रथोत्सवा ॥ ४९ ॥ रेतोवती रथोत्साहा राजहृद्रो
गहारिणी ॥ रंगप्रवृद्धमधुरा रंगमंडपमध्यगा ॥
॥ ५० ॥ रंजिता राजजननी रमा रेवा रती रणा ॥

राविणी रागिणी राज्या राजराजेश्वरार्चिता ५१॥
राजन्वती राजनीतिस्तथा रजतवासिनी ॥ राघ
वार्चितपादा श्रीराघवाराधनप्रिया ॥ ५२ ॥ रत्न
सागरमध्यस्था रत्नद्वीपनिवासिनी ॥ रत्नप्राका
रमध्यस्था रत्नमंडपमध्यगा ॥ ५३ ॥ रत्नाभि
षेकसंतुष्टा रत्नांगी रत्नदायिनी ॥ निकाररूपि
णी नित्या नित्यतृप्ता निरञ्जना ॥ ५४॥ निद्रात्य
यविशेषज्ञा नीलजीमूतसन्निभा ॥ नीवारशूकव
त्तन्वी नित्यकल्याणरूपिणी ॥ ५५ ॥ नित्योत्स
वा नित्यनित्या नित्यानंदस्वरूपिणी ॥ निर्विक

ल्पा निर्गुणस्था निश्चिता निरुपद्रवा ॥ ५६ ॥ निः
संशया संशयघ्नी निर्लोभा लोभनाशिनी ॥ नि
र्भवा भवपाशघ्नी नीतिशास्त्रविचारिणी ॥ ५७ ॥
निखिलागममध्यस्था निखिलागमसंस्थिता ॥
नित्योपाधिविनिर्मुक्ता नित्यकर्मफलप्रदा ॥५८॥
नीलग्रीवा निरीहा च निरञ्जनवरप्रदा ॥ नवनीत
प्रिया नारी नरकार्णवतारिणी ॥ ५९ ॥ नारायणी
निराहारा निर्मला निर्गुणप्रिया ॥ निर्मला
निर्गमाचारा निखलागमवेदिनी ॥ ६० ॥ निमि
षा निमिषोत्पन्ना निमेषांडविधायिनी ॥ निवात

दीपमध्यस्था निश्चिता चिन्तनाशिनी ॥ ६१ ॥
नीलवेणी नीलखंडा निर्विषा विषनाशिनी ॥ नी
लांशुकपरीधाना निंदिता निर्निरीश्वरी ॥ ६२ ॥
निश्वासाऽश्वासमध्यस्था मिथो याननिवासिनी ॥
यंकाररूपा यंत्रेशी यंत्रयंत्रा यशस्विनी ॥ ६३ ॥
यंत्राराधनसंतुष्टा यजमानस्वरूपिणी ॥ यशस्वि
नी यकारस्था यूपस्तंभनिवासिनी ॥ ६४ ॥ यम
घ्नी यमकल्पा च यशःकामा यतीश्वरी ॥ यमा
दियोंगनिरता यतिनिद्रापहारिणी ॥ ६५ ॥ या
ता यज्ञा यज्ञिया च यज्ञेश्वरपतिव्रता ॥ यज्ञय

ज्ञा यजुर्यज्वा यज्ञीनिकरकारिणी ॥ ६६ ॥ यज्ञ
सूत्रप्रदा ज्येष्ठा यज्ञकर्मफलप्रदा ॥ यवांकुरप्रिया
यामा यवनी यवनाधिपा ॥ ६७ ॥ यज्ञकर्त्री यज्ञ
भोक्त्री यज्ञांगी यज्ञवाहिनी ॥ यज्ञसाक्षी यज्ञमु
खी यजुषी यज्ञरक्षकी ॥ ६८ ॥ भकाररूपा भद्रे
शी भद्रकल्याणदायिनी ॥ भक्तप्रिया भक्तसखी
भक्ताभीष्टस्वरूपिणी ॥ ६९ ॥ भक्तिनी भक्तिसुल
भा भक्तिदा भक्तवत्सला ॥ भक्तचैतन्यनिलया
भक्तबंधविमोचनी ॥ ७० ॥ भक्तस्वरूपिणी भग्या
भाग्यारोग्यप्रदायिनी ॥ भक्तमाता भक्तगम्या

भक्ताभीष्टप्रदायिनी ॥ ७१ ॥ भास्वरी भैरवी
भोगी भवानी भयनाशनी ॥ भद्रात्मिका भद्रदा
यी भद्रकाली भयंकरी ॥ ७२ ॥ भगनिष्यंदिनी
भाग्या भवबंधविमोचिनी ॥ भीमा भीमनभा
भंगी भंगुरा भीमदर्शिनी ॥ ७३ ॥ भल्ली भल्ली
धरा भेरुर्भेरुंडा भीमपापहा ॥ भावज्ञा भोग्य
दात्री च भवघ्नी भूतिभूषणा ॥ ७४ ॥ भूतिदा
भूतिदात्री च भूपतित्वप्रदायिनी ॥ भ्रामरी
भ्रमरी भारी भवसंसारतारिणी ॥ ७५ ॥ भंडा
सुरवधोत्साहा भांडवा भाविनोदिनी ॥ गोका

रूपा गोमाता गुरुपत्नी गुरुर्गिरा ॥ ७६ ॥ गो
रोचनप्रिया गौरी गोविंदगुणवर्द्धिनी ॥ गोपाल
चेष्टा संतुष्टा गोवर्धनविवर्द्धिनी ॥ ७७ ॥ गोविं
दरूपिणी गोप्ता गोप्तागोत्रविवर्द्धिनी ॥ गीता
गीतप्रिया गेया गोका गोकुलवर्द्धिनी ॥ ७८ ॥
गोपी गोहत्यशमनी गुणा च गुणविग्रहा ॥ गो
विंदजननी गोष्ठा गोपदा गोकुलोत्सवा ॥ ७९ ॥
गोचरी गौतमी गोप्त्री गोमुखी गुरुवासिनी ॥
गोपाली गोमयी गुंठा गोष्ठी गोपुरवासिनी ॥
॥ ८० ॥ गरुडी गरुडश्रेष्ठा गारुडी गरुडध्व

जा ॥ गंभीरा गंडकी गंगा गरुडध्वजवल्लभा ॥
॥८१॥ गगनस्था गयावासा गुणवृत्तिर्गुडोद्भवा ॥
देकाररूपा देवेशी दृशिनी देवतार्चिता ॥८२॥ देव
राजेश्वरार्द्धांगी दीनदैन्यविमोचनी ॥ देशकालप
रिज्ञाना देशोपद्रवनाशिनी ॥ ८३ ॥ देवमाता दे
वमोहा देवदानवमोहिनी ॥ देवेंद्रार्चितपादश्री
र्देवदेवप्रसादिनी ॥८४ ॥ देशांतरी देवरूपा देवा
लयनिवासिनी ॥ देशभ्रमणकृद्देवी देशस्वास्थ्य
प्रदायिनी ॥ ८५ ॥ देवयाना देवता च देवसै
न्यप्रपालिनी ॥ वकाररूपा वाग्देवी वाचा मान

सगोचरी ॥ ८६ ॥ वैकुंठदेशिनी वेद्या वायुरूपा
वरप्रदा ॥ वक्रतुंडार्चितपदा वक्रतुंडप्रदायिनी
॥८७॥ वैचित्री च वसुमतिर्वसुस्थाना वसुप्रिया॥
वषट्कारा च चामुंडा वरारोहा वरावरी॥ ८८ ॥
वैदेही जननी वैद्या वैदेही शोकनाशिनी ॥ वेद
माता वेदकन्या वेदरूपा विनोदिनी ॥ ८९ ॥ वे
दान्तवादिनी वेदा वेदांतनिलयामरा ॥ वेदश्रवा
वेदघोषा वेदगानी विनोदिनी ॥ ९० ॥ वेदशा
स्त्रार्थतत्त्वज्ञा वेदमार्गप्रदर्शिनी ॥ वैदिककर्मफ
लदा वेदसागरतारिणी ॥ ९१ ॥ वेदवादी वेदगृह्या

वेदाश्वरथवाहिनी ॥ वेदचक्रा वेदवंद्या वेदांगी वेद
वित्कविः ॥ ९२ ॥ श्यकाररूपा श्यामांगी श्या
मा श्यामसरोरुहा ॥ श्यामाक्रा श्यालवृक्षा च
शतपत्रनिकेतना ॥ ९३ ॥ सर्वदृक्संनिविष्टा च
सर्वसंप्रेमणी सदा ॥ सव्यापसव्यदा सव्या
सध्रीची च सहायिनी ॥ ९४ ॥ भूकला सागरा
सारा सर्वभौमस्वभाविनी ॥ संतोषजननी सेव्या
सर्वेशी सर्वरंजनी ॥ ९५ ॥ सरस्वती समाराध्या
समदा सिंधुसेविनी ॥ सन्मोहिनी सदामोहा सर्व
मांगल्यदायिनी ॥ ९६ ॥ समस्तभुवनेशानी सर्व

कामफलप्रदा ॥ सर्वसिद्धिप्रदा साध्वी सर्वज्ञान
प्रदायिनी ॥ ९७ ॥ सर्वदारिद्र्यशमनी सर्वदुःख
विमोचनी ॥ सर्वरोगप्रशमनी सर्वपापविमोच
नी ॥ ९८ ॥ समदृष्टिः समगुणा सर्वसाक्षी सहा
यिनी ॥ सामर्थ्यवाहिनी संख्या सांद्रानंदपयोध
री ॥ ९९ ॥ संकीर्णमंदिरस्थायी साकेतकुलपा
लिनी ॥ संहारी शंकरी गौरी साकेतपुरवासिनी
॥ १०० ॥ संबोधनी समुत्तिष्ठा सम्यग्ज्ञानस्वरू
पिणी ॥ १०१ ॥ सम्पत्करी समानांगी सर्वभा
वसुसंस्थिता ॥ संबोधिनी समानंदा सन्मार्गकु

लपालिनी ॥ १०२ ॥ संजीवनी सर्वमेधा सभ्या
संपत्प्रदायिनी॥ समिद्धा समिधासीना सामान्या 
सामवेदिनी ॥ १०३ ॥ समुत्तीर्णा सदाचारा सं
हारा सर्वपावनी ॥ सर्पिणी सर्पमाता च सर्प
दष्टविमोचनी ॥ १०४ ॥ सर्पयागप्रशमनी
सर्वज्ञत्वफलप्रदा ॥ संक्रमासंक्रमा सिंधुः सर्गा
संग्रामपूजिता ॥ १०५ ॥ संकटा संकटाहा
री सकुंकुमविलेपना ॥ सुमुखा सुमुखस्थायी
सांगोपांगार्चनप्रिया ॥ १०६ ॥ संस्तुता संस्तुतिः
प्रीतिः सत्यवादी सदामुखी ॥ धीकाररूपा धीमा

ता धीरा धीरप्रसादिनी ॥ १०७ ॥ धीरोत्तमा
धीरधीरा धीरस्था धीरशेखरा ॥ स्थितिर्धैर्य्या
स्थविष्ठा च स्थपतिः स्थलविग्रहा ॥ १०८ ॥ धी
रा धारा धीरवंद्या धीपतिर्धीरमानसा ॥ धीपदा
धीपदस्थायी धीशाना धीप्रदा सखी ॥ १०९ ॥ म
काररूपी मैत्रेयी महामंगलदेवता ॥ मनोवैक
ल्यशमनी मलयाचलवासिनी ॥ ११० ॥ मल
यध्वजराजश्रीर्मीनाक्षी मधुरालया ॥ महादेवी
महारूपा महाभैरवपूजिता ॥ १११ ॥ मनुविद्या
मंत्रमाता मंत्रवश्या महेश्वरी ॥ मत्तमातंगगमना

मधुरा मेरुमंडपा ॥ ११२ ॥ महागुप्ता महाभूता
महाभयविनाशनी ॥ महागौरी महामंत्री महा
वैरिविनाशनी ॥ ११३ ॥ महालक्ष्मीर्महागौरी
महिषासुरमर्दिनी ॥ महेशमंडलस्था च मधुराग
मवर्जिता ॥ ११४ ॥ मेधा मेधाकरी मेध्या
माधवी मधुमर्दिनी ॥ मंत्रा मंत्रमयी मान्या मा
या महिममंत्रिणी ॥ ११५ ॥ मायारूपी माय
धारि मायस्था मायवादिनी ॥ मायासंकल्पज
ननी माया मायविनोदिनी ॥ ११६ ॥ मायाप्र
पंचजननी मायासंहाररूपिणी ॥ मायामंत्रप्रसा

दा च मायाजनविमोहिनी ॥ ११७ ॥ महाप
रा महारूपा महाविघ्नविनाशनी ॥ महानुभावा
मंत्रेशी महामंगलदेवता ॥ ११८ ॥ हिकारस्था
हृषीकेशी हितकार्यप्रवर्द्धिनी ॥ हीनोपाधिविनि
र्मुक्ता हीनलोकविमोचनी ॥ ११९ ॥ ह्रींकारा
ह्रीमती ह्रींह्रींह्रींदेवीह्रींस्वभाविनी ॥ ह्रीमती ह्रींव
ती हत्स्वा ह्रींशिवाह्रींकुलोद्भवा ॥ १२० ॥ हित
वादी हितप्रीता हितकारुण्यवर्द्धिनी ॥ हिताश
नी हितक्रोधा हितकर्मफलप्रदा ॥ १२१ ॥ हिमा
हिमसुता हेमा हेमाचलनिवासिनी ॥ हेती हिम

गा. प्रदा हारा होत्रा होतृहुतप्रदा ॥ १२२ ॥ हिमस्था स.
८३ हिमजा हेमा हितकर्मस्वभाविनी ॥१२३॥ धीका ८
ररूपा धिषणा धर्मरूपा धनेश्वरी ॥ धनुर्द्धराधरा
धाराधर्मकर्मफलप्रदा॥१२४॥धर्माचारा धर्मसारा
धर्ममध्यनिवाशिनी ॥ धनुर्वेदी धनुर्वादी धन्या
धूर्तविनाशिनी ॥ १२५ ॥ धनधान्या धेनुरूपा ध
नाढ्या धनदायिनी ॥ धनेशी धर्मनिरता धर्म
राजप्रसादिनी ॥ १२६ ॥ धर्मस्वरूपा धर्मेशी ध
र्माधर्मविचारिणी ॥ धर्मसूक्ष्मा धर्मसाक्षी धार्मि ८३
ष्ठा धर्मगोचरा ॥ १२७ ॥ योकाररूपा योगेशी

योगस्था योगरूपिणी ॥ योगा योगोपमारा
ध्या योगमार्गनिवासिनी ॥ ॥ १२८ ॥ योगा
सनस्था योगेशी योगमाया विलासिनी ॥ योगा
योगोपमाराध्या योगांगी योगविग्रहा ॥ १२९॥
योगवासी योगभोगी योगमार्गप्रदर्शिनी॥१३०॥
योधा योधवती योग्याऽयोग्या योधनतत्परा ॥
योधिनी योधिनीसेव्या योधज्ञानप्रबोधिनी १३१
योगेश्वरप्राणनाथा योगीश्वरहृदिस्थिता ॥ योगा
योगक्षेमकर्त्री योगक्षेमविहारिणी ॥ १३२॥ योग
राजेश्वराराध्या योगानंदस्वरूपिणी ॥ १३३ ॥

नवसिद्धिसमाराध्या नारायणमनोहरी ॥ ना
रायणी नवाधारा नवब्रह्मार्चिता सदा ॥ १३४ ॥
नगेंद्रतनयाराध्या नामरूपविवर्जिता ॥ नार
सिंहार्चितपदा नवबंधविमोचनी ॥ १३५ ॥ न
वग्रहार्चितपदा नवबंधविमोचनी ॥ नैमित्ति
कार्थनपदानंदितारिविनाशिनी ॥ १३६ ॥
नवसूत्रविधानज्ञा नैमिषारण्यवासिनी ॥ नव
पीठस्थिता देवी नवर्षिगणसेविता ॥ १३७ ॥
नवचन्दनदिग्धांगी नवकुंकुमधारिणी ॥ नव
वस्त्रपरीधाना नवरत्नविभूषणा ॥ १३८ ॥ नव

भस्मविदिग्धांगी नवचंद्रकलाधरा ॥ प्रकाश
रूपा प्राणेशी प्राणसंरक्षणी सदा ॥ १३९ ॥
प्राणसंजीवनी प्राणा प्राणाप्राणप्रबोधिनी ॥
प्रज्ञा प्रज्ञाप्रभा प्राच्या प्रतीची प्रबुधाप्रिया ॥
॥ १४० ॥ प्राचीरा प्रणयांतस्था प्रभातज्ञानरू
पिणी ॥ प्रभातकर्मसंतुष्टा प्राणायामपरायणा ॥
॥ १४१ ॥ प्रायज्ञा प्रणवा प्राप्ताप्रवृत्तिः प्रकृतिः
परा ॥ १४२ ॥ प्रबंधा प्रबुधा साक्षी प्राज्ञा प्रार
ब्धनाशिनी ॥ प्रबोधनिरता प्रेक्षा प्रबंधप्राणसा
क्षिणी ॥ १४३ ॥ प्रयागतीर्थनिलया प्रत्यक्षा पर

मेश्वरी ॥ प्रणवाद्यंतनिलयाप्रणवादिप्रचोदयात॥
॥ १४४ ॥ चोकाररूपा चोरघ्नी चोरबाधाविना
शिनी ॥ चेतनाचेतनाशीता चौराचौर्याचमत्कृ
तिः ॥ १४५ ॥ चक्रवर्तित्वधारी च चाक्रिणी चक्र
धारिणी ॥ चिरंजीवी चिदानंदा चिद्रूपा चिद्वि
लासिनी ॥ १४६ ॥ चिंता चित्तप्रशमनी चिंति
तार्थफलप्रदा ॥ चांपेयी चंपकप्रीता चंडी चंडा
ट्टहासिनी ॥ १४७ ॥ चंडेश्वरी चंडमाता चंड
मुंडविनाशिनी ॥ चकोराक्षी चिरप्रीता चिकुरा
चिकुरप्रिया ॥ १४८ ॥ चैतन्यरूपिणी चैत्री

चेतना चित्तसाक्षिणी ॥ चित्रा चित्रविचित्रांगी
चित्रगुप्तप्रसादिनी ॥ १४९ ॥ चलना चलसं
स्थायी चापिनी चलचित्रिणी ॥ चंद्रमंडलम
ध्यस्था कोटिचंद्रसुशीतला ॥ १५० ॥ चंद्रानु
जसमाराध्या चंद्रचंद्रमहोदरी ॥ चर्चितारिश्च
न्द्रमाता चन्द्रकांता चलेश्वरी ॥ १५१ ॥ चरा
चरनिवासा च चक्रपाणिसहोदरी ॥ दकाररूपा
दत्तश्रीदारिद्र्यच्छेदकारिणी ॥ १५२ ॥ दंतिनी
दंडिनी दीना दरिद्रा दीनवत्सला ॥ दक्षाराध्या
दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ १५३ ॥ दक्षा

गा. दाक्षायणी दाक्षा दीक्षादक्षवरप्रदा ॥ दक्षिणा स.
८६ दक्षिणाराध्या दक्षिणामूर्तिरूपिणी ॥ १५४ ॥ ८
दयावती दमवती दनुजादिर्दयानिधिः ॥ दंत
शोभानिभा दैवदमना दाडिमस्तनी ॥ १५५ ॥
दंडा दमयता दंडी दंडादंडप्रसादिनी ॥ दंडका
रण्यनिलया दंडकारिविनाशिनी ॥ १५६ ॥ दंष्ट्रा
करालप्रहृषी दंडशोभादलादली ॥ दरिद्रारिष्ट
शमनी द्रमादमनपूजिता ॥ १५७ ॥ दानवार्चित
पादश्रीर्द्रविणा द्रविणोदया ॥ दामोदरी दानवा ८६
रिर्दामोदरमहोदरी ॥ १५८ ॥ दाता दानप्रिया

दार्वी दानश्रीर्दीनदंडपा ॥ दम्पतीदम्पती दूर्वा
दधिदुग्धा दया दमा ॥ १५९ ॥ दाडिमीबीज
संदोहदन्तपंक्तिविराजिता ॥ दर्पणा दर्पणस्व
च्छा द्रुममंडलवासिनी ॥ १६० ॥ दशावतारज
ननी दशदिग्दीपपूजिता ॥ दया दशादिशादश्या
दशदासी दयानिधिः ॥ १६१ ॥ देशकालपरि
ज्ञाना देशकालविशोधिनी ॥ दशम्यादिकला
राध्या दशग्रीवप्रदर्पहा ॥ १६२ ॥ दशापराधश
मनी दशवृत्तिफलप्रदा ॥ यात्काररूपिणी याज्ञी
यादवी यादवार्चिता ॥ १६३ ॥ ययातिपूजनप्री

ता याज्ञिकी याजकप्रिया ॥ यादवीयातनायाता
यामपूजाफलप्रदा ॥ १६४ ॥ यशस्विनी यमा
राध्या यमकन्या यतीश्वरी ॥ यमादियोगसंतुष्टा
योगींद्रहृदिसंगमा ॥ १६५ ॥ यमोपाधिविनिर्मु
क्ता यशस्याविधिरच्युता ॥ यातनायातनादेहा
यात्रापापादिवर्जिता ॥ १६६ ॥ इत्येतत्कथितं
देवि रहस्यं सर्वकामदम् ॥ सर्वपापप्रशमनं सर्व
तीर्थफलप्रदम् ॥ १६७ ॥ सर्वरोगहरं पुण्यं सर्व
ज्ञानमयं शिवम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदं देवि सर्वसौभा
ग्यवर्द्धनम् ॥ १६८ ॥ आयुष्यं वर्द्धते नित्यं लि

खितं यत्र तिष्ठति ॥ न चौराग्निभयं तस्य न च
भूतभयं क्वचित् ॥ १६९ ॥ किं पुनर्वरुणोक्तेन
तथापि च वदाम्यहम् ॥ सकृच्छ्रवणमात्रेण को
टिजन्माघनाशनम् ॥ १७० ॥ महापातककोटी
नां भंजनं स्मृतिमात्रतः ॥ अपवादकदौर्भाग्यश
मनं भुक्तिमुक्तिदम् ॥१७१॥ विषरोगादिदारिद्र्य
मृत्युसंहारकारणम् ॥ सप्तकोटिमहामंत्रपारायण
फलप्रदम् ॥ १७२ ॥ शतरुद्रीयकोटीनां जपं
यज्ञफलप्रदम् ॥ चतुःसमुद्रपर्य्यंतभूदानं तत्फलं
शिवे ॥ १७३ ॥ सहस्रकोटिगोदानफलदं स्मृति

मात्रतः ॥ कोटयश्वमेधफलदं जरामृत्युनिवारण
म् ॥ १७४ ॥ कन्याकोटिप्रदानेन यत्फलं लभ
ते नरः॥तत्फलं लभते सम्यङ्नाम्नांदशशतीज
पात् ॥१७५॥ यः शृणोति महाविद्यां श्रावयेद्वा
समाहितः ॥ सोपि मुक्तिमवाप्नोति यत्र गत्वा न
शोचति ॥ १७६ ॥ ब्रह्महत्यादिपापानां नाशः
स्याच्छ्रवणेन च॥ किं पुनः पठनादस्य मुक्तिः स्या
दनपायिनी ॥ १७७ ॥ इदं रहस्यं परमं पुण्यं
स्वस्त्ययनं महत् ॥ यः सकृद्वा पठेत्स्तोत्रं शृणु
याद्वा समाहितः ॥ १७८ ॥ लभते च ततः कामा

नन्ते ब्रह्मपदं व्रजेत् ॥ स च शत्रूञ्जयेत्सद्यो मा
तंगानिव केसरी ॥ १७९ ॥ इति श्रीमद्रुद्रयामले
शिवपार्वतीसंवादे ब्रह्मप्रोक्तं श्रीगायत्र्या मंत्रवर्णा
त्मकं दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ ॥
शुभं भूयात् ॥ ॥ मंगलमस्तु ॥

॥ अथ गायत्रीपटलप्रारंभः ॥

ॐ अस्य श्रीब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य निग्रहानु
ग्रहकर्ता प्रजापतिर्ऋषिः ॥ कामदुघा गायत्री
छंदः ॥ ॐब्रह्मशापविमोचनीगायत्रीशक्तिर्देवता
ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोगः ॥ सवितुः

गा. ब्रह्मोमेत्युपासनात्तद्ब्रह्मविदो विदुस्ता प्रयतंति प.
८१ धीराः॥ सुमनसा वाचा ममाग्रतः ॥ ब्रह्मशापाद्वि ९
मुक्ता भव ॥ ॐ विश्वामित्रशापविमोचनमंत्रस्य
नूतनसृष्टिकर्ता विश्वामित्र ऋषिः ॥ वाग्दोहा
गायत्रीछंदः ॥ भुक्तिमुक्तिप्रदाविश्वामित्रानुग्रही
तागायत्रीशक्तिः॥ सविता देवता ॥विश्वामित्रशा
पविमोचनार्थे जपे विनियोगः॥तत्त्वानि चांगेष्व
स्त्रिचितोधियांसः त्रिगर्भां यदुद्भवां देवाश्चोचिरे
विश्वसृष्टिं तां कल्याणीमिष्टकरीं प्रपद्ये यन्मुखा ८१
न्निःसृतो वेदगर्भः ॥ ॐगायत्रि त्वं विश्वामित्रशा

पादिमुक्ता भव ॥ ॐ वसिष्टशापविमोचनमंत्र
स्य वसिष्ठ ऋषि ॥ विश्वोद्भवो गायत्री छंदः ॥
वसिष्ठानुग्रहीतागायत्रीशक्तिर्दैवता ॥ वसिष्ठशा
पविमोचनार्थं जपे विनियोगः ॥तत्त्वानि चांगेष्व
ग्निचितोधियांसः ध्यायंति विष्णोरायुधानि बि
भ्रत् ॥ जनानतासोपरमं च शश्वत् ॥ गायत्री
मासाच्छुरनुत्तमं च धाम ॥ ॐगायत्रीवसिष्ठशा
पाद्विमुक्ता भव सोहमर्कमहं ज्योतिरर्कः ज्योति
रहं शिवः॥ आत्मज्योतिरहं शुक्लं शुक्लं ज्योतिर
सोहमोम् ॥ अहो विष्णुमहेशेशो दिव्ये सिद्धि

गा. सरस्वति ॥ अजरे अमरे चैव दिव्ययोनि नमोस्तु प.
१० ते ॥ शुद्धं गायत्रीध्यानम् ॥ यद्देवैः सुरपूजितं ९
परतरं सामर्थ्यतारात्मकं पुन्नागाम्बुजपुष्पनाग
बकुलैः केशैःशुकैरर्चितम् ॥ नित्यं ध्यानसमस्त
दीप्तिकरणंकालाग्निरुद्दीपनं तत्संहारकरं नमामि
सततं पातालसंस्थं मुखम् ॥ न्यासः ॥ ॐ तत्पा
दांगुलिपर्वभ्यां नमः ॥ ॐ सपादांगुलिभ्यो
नमः ॥ ॐ विजंघा० ॥ ॐ तुर्जा नुभ्यां
नमः ॥ ॐ व ऊरुभ्यां नमः ॥ ॐ रेशि १०
श्नाय नमः ॥ ॐ णि वृषणाभ्यां नमः ॥ ॐ यं

कट्यै नमः॥ ॐ भर्नाभ्यै नमः ॥ ॐ गो उदराय नमः ॥ ॐ दे स्तनाभ्यां नमः ॥ ॐ व उरसे नमः ॥ ॐ स्य कण्ठाय नमः ॥ ॐ धी दंतेभ्यो नमः ॥ ॐ म तालुने नमः ॥ ॐ हि नासिकायै नमः ॥ ॐ धि नेत्राभ्यां नमः ॥ ॐ यो भ्रूभ्यां नमः ॥ ॐ यो ललाटाय नमः ॥ ॐ नः पूर्वमुखाय नमः ॥ ॐ प्र दक्षिणमुखाय नमः ॥ ॐ चो पश्चिममुखाय नमः ॥ ॐ द उत्तरमुखाय नमः ॥ ॐ यात् मूर्ध्ने नमः ॥ इति वर्णन्यासः ॥ ॐ तत्सवितुरंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ वरेण्यं तर्ज

नीभ्यां नमः ॥ ॐ भर्गोदेव मध्यमाभ्यां नमः ॥ 
ॐ धीमहि अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ धियो
योनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ प्रचोदयात्
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ अथ देहन्यासः ॥
ॐ भूः पादयोः ॥ ॐ भुवः जान्वोः ॥ ॐ स्वः
नाभौ ॥ ॐ महः हृदये ॥ ॐ जनःकण्ठे ॥ ॐ तपः
ललाटे ॐ सत्यं मूर्ध्नि ॥ ॐ तत्पादयोः ॥ ॐ
सवितुर्जान्वोः ॐ वरेण्यं स्कंधयोः ॥ ॐ भर्गो
हृदये ॥ ॐ देवस्य कण्ठे ॥ ॐ धीमहि वक्रे ॥ 
ॐ धियो यो नेत्रे ॥ ॐ नः मुखे ॥ ॐ प्रचो

दयात अस्त्राय फट् ॥ ॐ आपः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ज्योतिस्तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ रसो मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ अमृतम् अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ब्रह्म कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ भूर्भुवः स्वरोम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ॐ अग्नये हृदयाय नमः ॥ ॐ वायवे शिरसे स्वाहा ॥ ॐ सूर्याय शिखायै वषट्॥ ॐ ब्रह्मणे कवचाय हुम्॥ ॐ विष्णवे नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ रुद्राय अस्त्राय फट् ॥ इति न्यासः॥ अथ वेदादिगीतायाः प्रसादजननं विधिम् ॥ गायत्र्याः संप्रवक्ष्यामि

गा. धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ १ ॥ नित्यनैमित्तिके प.
१,२ काम्ये तृतीये तपवर्द्धने ॥ गायत्र्यास्तु परं ना १
स्ति इह लोके परत्र च ॥२॥ मध्याह्ने मितभुङ्मौ
नी त्रिस्थानार्चनतत्परः ॥ जपेल्लक्षत्रयं धीमान्ना
न्यमानसकस्तु यः ॥ ३ ॥ कर्मभिर्यो जपेत्प
श्चात्क्रमशः स्वेच्छयापि वा ॥ यावत्कार्यं न
कुर्वीत न लोपेत्तावता व्रतम् ॥ ४ ॥ आदित्य
स्योदये स्नात्वा सहस्रं प्रत्यहं जपेत ॥ आयुरा
रोग्यमैश्वर्यं धनं च लभते ध्रुवम् ॥५॥ त्रिरात्रो १२
पोषितः सम्यग्घृतं हुत्वा सहस्रशः ॥ सहस्रं ला

भमाप्नोति हुत्वाग्नौ खदिरेंधनम् ॥६॥ पालाशैः
समिधैश्चैव घृताक्तानां हुताशने ॥ सहस्रं लाभ
माप्नोति राहुसूर्यसमागमे ॥ ७ ॥ हुत्वा तु खदिरं
वह्नौ घृताक्तं रक्तचन्दनम् ॥ सहस्रहेममाप्नोति
राहुचन्द्रसमागमे ॥ ८ ॥ रक्तचन्दनमिश्रं तु
सघृतं हव्यवाहने ॥ हुत्वा गोमयमाप्नोति सहस्रं
गोमयं द्विजः ॥ ९ ॥ जातीचंपकराजार्ककुसुमा
नां सहस्रशः ॥ हुत्वा वस्त्रमवाप्नोति घृताक्तानां
हुताशने ॥ १० ॥ सूर्यमंडलबिम्बे च हुत्वा तोयं
सहस्रशः ॥ सहस्रं प्राप्नुयाद्धैमं रौप्यमिंदुमये

गा. हुते ॥ ११ ॥ अलक्ष्मीपापसंयुक्ते मलव्याधिवि प.
९३ नाशके ॥ मुच्येत्सहस्रजाप्येन स्नायाद्यस्तु ९
जलेन वै ॥ १२ ॥ गोघृतेन सहस्रेण लोध्रेण
जुहुयाद्यदि ॥ चौराग्निमारुतोत्थानि भयानि न
भवंति वै ॥ १३ ॥ क्षीराहारो जपेल्लक्षमपमृत्यु
मपोहति ॥ घृताशी प्राप्नुयान्मेधां बहुविज्ञान
संचयाम् ॥ १४ ॥ हुत्वा वेतसपत्राणि घृताक्तानि
हुताशने ॥ लक्षाधिपस्य पदवीं सार्वभौमं न
संशयः ॥ १५ ॥ लक्षेण भस्महोमस्य हुत्वा ह्युत्ति ९३
ष्ठते जलात ॥ आदित्याभिमुखं स्थित्वा नाभि

मात्रजले शुचौ ॥ १६ ॥ गर्भपातादिप्रदराश्चा
न्ये स्त्रीणां महारुजः ॥ नाशमेष्यंति ते सर्वे मृत
वत्सादिदुःखदाः ॥ १७ ॥ तिलानां लक्षहोमेन
घृताक्तानां हुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मा परं
स्थानमवाप्नुयात् ॥ १८ ॥ यवानां लक्षहोमेन घृ
ताक्तानां हुताशने ॥ सर्वकामसमृद्धात्मा परां
सिद्धिमवाप्नुयात् ॥ १९ ॥ घृतस्याहुतिलक्षेण स
र्वान्कामानवाप्नुयात् ॥ पंचगव्याशनो लक्षं जपे
ज्जातिस्मृतिर्भवेत् ॥ २० ॥ तदेवह्यनले हुत्वाप्रा
प्नोति बहुसाधनम् ॥ अन्नादिहवनान्नित्यमन्ना

ध्यं च भवेत्सदा ॥२१॥ जुहुयात्सर्वसाध्यानामा
हुत्यायुतसंख्यया ॥ रक्तसिद्धार्थकान्हुत्वा सर्वा
न्साधयते रिपून्॥२२॥लवणं मधुसंयुक्तं हुत्वा स
र्ववशीभवेत्॥हुत्वा तु करवीराणिरक्तानि ज्वालये
ज्ज्वरम्॥२३॥ हुत्वा भिल्लातकंतैलं देशादेवप्रचा
लयेत्॥हुत्वातु निंबपत्राणि विद्वेषशांतये नृणाम्॥
॥२४॥रक्तानां तंदुलानां च घृताक्तानां हुताशने ॥
हुत्वा बलमवाप्नोतिशत्रुभिर्न स जीयते ॥ २५॥
प्रत्यानयनसिद्ध्यर्थं मधुसर्पिःसमन्वितम् ॥ गवां
क्षीरं प्रदीप्तेग्नौ जुह्वतस्तत्प्रशाम्यति ॥ २६ ॥ ब्रह्म

चारी जिताहारो यः सहस्रत्रयं जपेत ॥ संवत्सरे
ण लभते धनैश्वर्यं न संशयः ॥ २७ ॥ शमीबिल्व
पलाशानामर्कस्य तु विशेषतः ॥ पुष्पाणां समि
धश्चैव हुत्वा हेममवाप्नुयात् ॥ २८ ॥ आब्रह्मत्र्यं
बकादीनां यस्यायतनमाश्रितः ॥ जपेल्लक्षं निराहा
रः स तस्य वरदो भवेत ॥ २९ ॥ बिल्वानांलक्षहो
मेन घृताक्तानां हुताशने ॥ परांश्रियमवाप्नोति
यदि न भ्रूणहा भवेत् ॥ ३० ॥ पद्मनां लक्षहोमेन
घृताक्तानां हुताशने ॥ प्राप्नोति राज्यमखिलं सु
संपन्नमकंटकम् ॥ ३१ ॥ पंचविंशतिलक्षेण दधि

क्षीरं हुताशने ॥ स्वदेहे सिद्ध्यते जंतुः कौशिकस्य
मतं तथा ॥ ३२ ॥ एकाहं पंचगव्याशी एकाहंमा
रुताशनः ॥ एकाहं च द्विजोन्नाशी गायत्रीजप
उच्यते ॥ ३३ ॥ महारोगा विनश्यंति लक्षजप्या
नुभावतः ॥ शतेन गायत्र्याः स्नात्वा शतमंतर्ज
ले जपेत् ॥ ३४ ॥ शतेन यस्त्वपः पीत्वा सर्वपापैः
प्रमुच्यते ॥ गोघ्नः पितृघ्नमातृघ्नौब्रह्महा गुरुत
ल्पगः॥ ३५॥ स्वर्णहारी तैलहारी यस्तु विप्रःसुरां
पिबेत् ॥ चंदनद्वयसंयुक्तं कर्पूरं तंडुलं यवम्॥३६॥
लवंगं सुफलं चाज्यं सिता चाम्रस्य दारुकैः ॥

अयं न्यूनविधिः प्रोक्तो गायत्र्याः प्रीतिकारकः॥
॥३७॥ एवंकृते महासौख्यं प्राप्नोति साधको ध्रुवम्॥
अन्नाज्यभोजनं हुत्वा कृत्वा वा कर्मगर्हितम् ३८॥
न सीदेत्प्रतिगृह्णानो महीमपि ससागराम् ॥ ये
चास्य उत्थिता लोके ग्रहाः सूर्यादयो भुवि ॥ ते
यांति सौम्यतां सर्वे शिवे इति न संशयः ॥ ३९॥

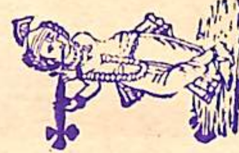
इति गायत्रीपटलं समाप्तम् ॥

---

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां श्रीकृष्णदासात्मजक्षेमराजेन
स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयेऽ
ङ्कितम् संवत् १९६७ शके १८३२



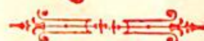




॥ श्रीः ॥

ब्राह्मण्यमूलापि च क्षत्रवैश्यानां धर्मपालनहेतुभूतेयं गायत्री तस्याः पूजापाठादि सर्वेषामपेक्षतेऽतोस्माकमासीन्मनीषैतन्मुद्रणे । एतस्मिन्नेव काले सम्वत् १८२३ तमे लिखितं गायत्रीपंचांगपुस्तकं यत्नेन संगृहीतमयोध्यामण्डलांतर्गतरायबरेलीप्रान्तस्थ दौलतपुरनिवासिमहावीरप्रसादद्विवेदि (हेडटेलिग्राफ इन्सपेक्टर आय० एम्० रेलवे झांसी तथा विहारवाटिकाविनयविनोद स्नेहमाला व ऋतुतरंगिणीके कर्ता ) इत्येतैः प्रेषितम् । तथा च द्वितीयं प्राचीनं पुस्तकं अर्गलपुरनिवासिपण्डितचिरंजीलालब्रजलाल इत्येतैः प्रेषितम् । अत उक्तपण्डितद्वयस्य बहूपकारभारं शिरसा धारयामः । तथा च अस्मत्समीपेपि कानिचिदासन् पुस्तकानि । इतीमानि संमेल्य रावेरग्रामनिवासिपरशुरामभट्टतनयगोविंदशास्त्रिभिः संशोध्य मुद्रितम् । एतत्पुनर्मुद्रणाद्यधिकारः १८६७ खिस्ताब्दिक २५ तमनियमानुसारेणास्माभिः स्वाधीनतया रक्षितः । इत्यावेदयति **क्षेमराजश्रीकृष्णदासः “श्रीवेंकटेश्वर”** स्टीम्‌यन्त्रालयाध्यक्षः, **मुम्बईस्थः**

# क्रय्यपुस्तकानि ।







**धन्वन्तरीतंत्रशिक्षा**—भाषाटीका देवादिदेव महादेवप्रणीत इस ग्रन्थमें तंत्रके विषय बहुत अच्छे हैं तांत्रिकोंके अवश्य लेने योग्य है.... १)

**प्रत्यंगिरापंचांग**—इसमें पटलपद्धति कवच सहस्रनाम स्तोत्रका संग्रह प्रत्यक्ष फलदायकहै. .... .... .... .... ॥)

**राधाकृष्णपंचांग**—जिसमें श्रीराधिका और कृष्णजीका युगलरूप पटल पद्धति कवच सहस्रनाम स्तोत्र भक्तिमय उपासनायोग्य है रेशमीगुटका. ॥)



**उच्छिष्टगणपति पंचांग** .... .... .... .... ॥=)

**गायत्रीपुरश्चरण**.... .... .... .... .... =)॥

संपूर्ण पुस्तकोंका “**बडासूचीपत्र**” अलगहै, मँगाकर देखिये ॥

**पता—खेमराज श्रीकृष्णदास “श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम् प्रेस,**

७ खेतवाडी खम्भाटा गली—बंबई.



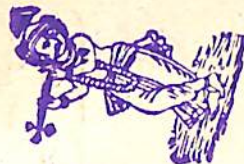



































॥ इति गायत्रीपंचांगं--
समाप्तम् ।











